Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ज्योति

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ज्योति

यूहन्ना रचित सुसमाचार

प्रकाशक :

मसीही साहित्य संस्था

७० जनपथ, नई दिल्ली-१

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

प्रकाशक :
मसीही साहित्य संस्था
७० जनपथ, नई दिल्ली-१

'The Living Gospel of St. John'
A Paraphrase translation in Hindi

© 1972, Living Bibles International

प्रथम संस्करण	: १९७२	५०,०००
द्वितीय संस्करण	: १९७३	१,००,०००
तृतीय संस्करण	: १९७४	५०,०००
चतुर्थ संस्करण	: १९७४	१०,००,०००

मूल्य : ३० पैसे

मुद्रक : ग्रैफ़िक प्रिंट ऐंड सप्लाई कम्पनी, डी-55 नरैना
नई दिल्ली-110028.

यूहन्ना रचित सुसमाचार

१ १,२ सृष्टि की उत्पत्ति से पहले जब कुछ भी न था,[1] तब मसीह[2]
परमेश्वर के साथ थे। वह सदाकाल से हैं और वह स्वयं परमेश्वर हैं ।
३ उन्होंने सब वस्तुओं की सृष्टि की—कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसे उन्होंने
न बनाया हो । ४ उनमें अनन्त जीवन है और यह जीवन मानव जाति
को ज्योति प्रदान करता है । ५ उनका जीवन ऐसी ज्योति है जो अन्धकार
में चमकती है—और अंधकार उसे कभी बुझा नहीं सकता ।

६,७ परमेश्वर ने यूहन्ना (जो बपतिस्मा देता था) को गवाह बनाकर
भेजा ताकि सब जानें कि मसीह यीशु ही सच्ची ज्योति हैं । ८ यूहन्ना
स्वयं वह ज्योति न थे, वह लोगों से उस ज्योति का परिचय कराने के लिए
केवल एक गवाह थे ।

९ आगे चलकर वह जो सच्ची ज्योति हैं, आए कि संसार में आने
वाले सब मनुष्यों पर चमकें । १० यद्यपि उन्होंने संसार को बनाया,
तौभी उनके आने पर संसार ने उन्हें नहीं पहिचाना । ११,१२ स्वयं अपनी
जन्मभूमि में अपने लोगों, अर्थात् यहूदियों द्वारा वह ग्रहण नहीं किए गए ।
केवल थोड़े ही लोगों ने उन्हें ग्रहण किया । परन्तु उन सब को जिन्होंने
उन्हें ग्रहण किया, उन्होंने परमेश्वर की सन्तान बनने का अधिकार दिया ।
उन्हें केवल इतना ही विश्वास करना था कि मसीह उनको[3] बचाएंगे ।
१३ जितनों ने मसीह पर विश्वास किया उनका नया जन्म हुआ ।—यह
जन्म मनुष्य की कामना और इच्छा के फलस्वरूप शारीरिक जन्म[4] नहीं
था—परन्तु परमेश्वर की इच्छा से होने वाला जन्म था ।

---

१ "आदि में" २ "वचन" अर्थात मसीह परमेश्वर का ज्ञान और सामर्थ, सब वस्तुओं का सृष्टिकर्ता, परमेश्वर के व्यक्तित्व का मनुष्यों पर प्रगटीकरण ३ "उनके नाम पर विश्वास करना ।" ४ "लोहू से नहीं"

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

१४ और मसीह मनुष्य बन कर आए तथा इस संसार में हमारे मध्य
रहे। वह प्रेममय क्षमा[5] और सत्य से भरपूर थे। हममें से कुछ ने उनकी
ऐसी महिमा[6] देखी है जो स्वर्ग में निवास करने वाले पिता[7] के एकलौते
पुत्र की महिमा है। १५ यूहन्ना ने भीड़ से यह कहते हुए यीशु मसीह को
लोगों पर प्रगट किया, "यह वही हैं जिनके विषय में मैंने कहा था, 'एक व्यक्ति
आने वाले हैं जो मुझसे कहीं बढ़ कर महान हैं—क्योंकि वह मुझसे बहुत
पहले थे'।" १६ उनकी अपार आशिषों का लाभ हमने भी प्राप्त किया—
उन्होंने हम पर आशिष पर आशिष बरसाई। १७ क्योंकि मूसा ने हमें
केवल व्यवस्था दी जिसकी मांगें कठोर और न्याय दयारहित हैं, किन्तु
प्रभु यीशु ने हमें प्रेमपूर्ण क्षमादान दिया। १८ वास्तव में परमेश्वर को
किसी ने कभी नहीं देखा, परन्तु उसके एकलौते पुत्र मसीह यीशु ने अवश्य
देखा है क्योंकि वह तो पिता के साथी हैं और उन्हीं ने पिता के विषय में
हमें सब बातें बताई हैं।

१९ यहूदी अगुवों[8] ने याजकों और सहायकों को यरूशलेम से यह
पूछने के लिए यूहन्ना के पास भेजा कि क्या वह मसीह होने का दावा
करते हैं? २० यूहन्ना ने एकदम अस्वीकार करते हुए कहा, "मैं मसीह
नहीं हूं।" २१ उन्होंने पूछा, "फिर आप कौन हैं? क्या आप एलिय्याह
हैं?" उन्होंने उत्तर दिया, "नहीं"। "क्या आप भविष्यद्वक्ता हैं?"[9]
"नहीं"। २२ "तब आप कौन हैं? हमें बताइए ताकि हम उन्हें उत्तर
दे सकें जिन्होंने हमें भेजा है। आपको अपने विषय में क्या कहना है?"
२३ उन्होंने उत्तर दिया, "मैं जंगल में पुकारने वाला वह शब्द हूं जिसकी
भविष्यद्वाणी यशायाह ने की थी, 'प्रभु के आने के लिए तैयार हो
जाओ'।"

२४, २५ तब फरीसियों द्वारा भेजे गए लोगों ने कहा, "यदि आप न
मसीह, न ही एलिय्याह अथवा वह भविष्यद्वक्ता हैं तो आपको बपतिस्मा
देने का क्या अधिकार है?" २६ यूहन्ना ने उन्हें बताया, "मैं केवल पानी
से[10] ही बपतिस्मा देता हूं परन्तु यहीं इस भीड़ में एक व्यक्ति हैं जिनसे तुम

---

५ "अनुग्रह" ६ मत्ती १७:२ देखिए। ७ या "उसका अपूर्व पुत्र" ८
"यहूदी" ९ व्यवस्थाविवरण १८:१५ पढ़िये। १० या, "मैं"

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
अपरिचित हो, २७ जो तुम्हारी सेवा का कार्य शीघ्र ही आरम्भ करेंगे, और मैं तो उनका दास होने के भी योग्य नहीं ।" २८ यह घटना बैतनिय्याह नामक गांव में हुई जो यर्दन नदी के किनारे है जहां यूहन्ना बपतिस्मा दे रहे थे ।

२९ अगले दिन यूहन्ना ने मसीह को अपनी ओर आते देखा और कहा, "देखो ! यह परमेश्वर का मेम्ना हैं जो संसार के पाप उठा ले जाते हैं । ३० मैं इन्हीं के विषय में कह रहा था, 'एक व्यक्ति आने वाले हैं जो मुझ से कहीं बढ़कर महान हैं और जो मुझ से बहुत पहले से थे ।' ३१ मुझे नहीं मालूम था कि यह वही हैं परन्तु मैं यहां पानी से बपतिस्मा दे रहा हूं ताकि उन्हें इस्राएल के लोगों पर प्रगट करूं ।" ३२ तब यूहन्ना ने बताया कि उन्होंने पवित्र आत्मा को कबूतर के रूप में स्वर्ग से उतरते और यीशु पर ठहरते देखा है । ३३ यूहन्ना ने फिर कहा, "मैं न जानता था कि यह वही हैं । परन्तु परमेश्वर ने मुझे बपतिस्मा देने के लिए भेजते समय कहा था, 'जिस व्यक्ति पर तुम पवित्र आत्मा को उतरते और ठहरते देखो—तो वही हैं जिनकी बाट तुम जोह रहे हो । वही पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देते हैं ।' ३४ मैंने देखा कि इस व्यक्ति के साथ भी ऐसा ही हुआ और इसीलिए मैं गवाही देता हूं कि परमेश्वर के पुत्र यही हैं ।"

३५ अगले दिन जब यूहन्ना अपने दो चेलों के साथ खड़े थे, ३६ यीशु पास से होकर निकले । यूहन्ना ने ध्यान से उनकी ओर देखकर कहा, "देखो ! यही परमेश्वर का मेम्ना हैं ।" ३७ तब यूहन्ना के दोनों चेले उन्हें छोड़ कर यीशु के पीछे हो लिए । ३८ यीशु ने पलटकर देखा कि वे पीछे आ रहे हैं उन्होंने उनसे पूछा, "तुम्हें क्या चाहिए ?" उन्होंने पूछा, "हे गुरु आप कहां रहते हैं ?" ३९ उन्होंने कहा, "आओ और देखो" । वे उनके साथ वहां गए, जहां यीशु ठहरे थे और दोपहर चार बजे से लेकर संध्या समय तक उनके संग रहे । ४० (उनमें से एक व्यक्ति शमौन पतरस का भाई अन्द्रियास था ।) ४१ अन्द्रियास अपने भाई को ढूंढ़ने गया और उससे कहा, "हमें मसीह मिल गए हैं ।" ४२ वह उसे यीशु के पास ले गया । यीशु ने पतरस की ओर एक क्षण तक ध्यानपूर्वक देखकर कहा, "तुम यूहन्ना के पुत्र शमौन हो—तुम पतरस अर्थात चट्टान कहलाओगे ।"

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

४३ दूसरे दिन यीशु ने गलील जाने का निर्णय किया। उन्होंने फिलिप्पुस को देखकर कहा, "मेरे साथ आ।" ४४ (फिलिप्पुस बैतसैदा का निवासी था। अन्द्रियास और पतरस भी वहीं के रहने वाले थे।) ४५ तब फिलिप्पुस, नतनएल को देखने बाहर गया और उससे कहा, "मसीह हमें मिल गए हैं।—यह वही व्यक्ति हैं जिनके विषय में मूसा और भविष्यद्वक्ताओं ने बताया था। उनका नाम यीशु है। वह नासरत निवासी यूसुफ के पुत्र हैं।" ४६ नतनएल ने आश्चर्य से कहा, "नासरत! क्या वहां से कोई अच्छी वस्तु निकल सकती है?" फिलिप्पुस ने कहा, "आ कर स्वयं देख ले।" ४७ जैसे ही वे पास पहुंचे, यीशु ने नतनएल को देखकर कहा, "एक ईमानदार व्यक्ति आ रहा है—इस्राएल का सच्चा पुत्र!" ४८ नतनएल ने पूछा, "आपको कैसे मालूम कि मैं किस प्रकार का व्यक्ति हूं?" यीशु ने उत्तर दिया, "फिलिप्पुस के बुलाने से पहले मैंने तुम्हें अंजीर के पेड़ के नीचे खड़ा देखा था।" ४९ नतनएल ने कहा, "गुरु आप परमेश्वर के पुत्र, इस्राएल के राजा हैं।" ५० यीशु ने उससे पूछा, "क्या तुम इन बातों पर, इसलिए विश्वास करते हो क्योंकि मैंने कहा कि मैंने तुम्हें अंजीर के वृक्ष के नीचे देखा था? तुम इससे भी बड़े बड़े प्रमाण देखोगे। ५१ यहां तक कि तुम स्वर्ग को खुला और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को मुझ—महिमामय मनुष्य[११] तक आते जाते देखोगे।"

२ दो दिन के बाद गलील के काना नामक गांव में किसी का विवाह था। उसमें यीशु की माता अतिथि थीं। २ यीशु और उनके चेले भी निमंत्रित थे। ३ विवाहोत्सव के समय दाखरस समाप्त हो गया। यीशु की माता इस समस्या को लेकर उनके पास आईं। ४ यीशु ने कहा,[१] "मैं आपकी सहायता नहीं कर सकता। मेरा समय अभी तक नहीं आया कि आश्चर्यकर्म करूं।" ५ तब उनकी माता ने सेवकों से कहा, "वह

११ "मनुष्य का पुत्र"—यह नाम बड़े आदर और महिमा का था।
१ "हे महिला मुझे तुमसे क्या काम?"

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तुमसे जो कुछ करने को कहें, वही करना।" ६ वहां पत्थर के बड़े-बड़े
छः घड़े रखे थे। उन्हें यहूदी अपने धार्मिक उत्सवों के समय काम में लाते
थे। उनमें से प्रत्येक में लगभग बीस-तीस गैलन पानी समाता था।
७,८ यीशु ने सेवकों से कहा, "उन्हें पानी से लबालब भर दो।" जब
ऐसा हो गया तो उन्होंने कहा, "इसमें से कुछ निकाल कर भोज के प्रबन्धक
के पास ले जाओ।" ९ जब प्रबंधक ने वह पानी चखा (जो अब दाखरस
बन गया था!) तो न जानते हुए कि कहां से आया था (यद्यपि सेवक
इसे अवश्य जानते थे) उसने दूल्हे को बुलाया। १० "यह दाखरस तो बहुत
अच्छा है" उसने कहा, "तुम तो सबसे भिन्न हो। लोग तो सबसे अच्छे
दाखरस को पहले देते हैं। जब सब पीकर छक जाते हैं तभी वे घटिया
प्रकार का दाखरस निकालते हैं। परन्तु तुमने तो सबसे उत्तम दाखरस
को अन्त के लिए रख छोड़ा है।" ११ गलील के काना गांव में यह पहला
आश्चर्यकर्म था जिसे मसीह ने लोगों के सामने किया और इसके द्वारा
स्वर्ग से प्राप्त अपनी सामर्थ को प्रकट किया। और उनके चेलों ने विश्वास
किया कि वह सचमुच मसीह[2] हैं।

१२ इसके बाद वह अपनी माता, भाइयों और चेलों के साथ कुछ
दिनों के लिए कफरनहूम नगर को गए।

१३ यहूदियों के फसह का त्यौहार निकट था, और यीशु यरूशलेम
को गए। १४ उन्होंने मन्दिर में व्यापारियों को बलिदान के लिए बैल,
भेड़ और कबूतर बेचते देखा और सर्राफों को भी बैठे देखा। १५ यीशु ने
रस्सियों का कोड़ा बना कर सब भेड़ों तथा बैलों को बाहर निकाल दिया।
उन्होंने सर्राफों के पैसे बिखेर दिए और उनकी मेज़ें उलट दीं। १६ तब
कबूतर बेचने वालों के पास जाकर उनसे कहा, "इन्हें यहां से एकदम बाहर
निकालो। मेरे पिता के घर को बाजार मत बनाओ!" १७ तब उनके
चेलों को पवित्र शास्त्र की यह भविष्यद्वाणी याद आई: "परमेश्वर
के भवन का ध्यान मुझे निरन्तर बना रहेगा।" १८ यहूदी अगुवों[3] ने
धमकी देते हुए उनसे पूछा, "उन्हें निकालने का तुम्हें क्या अधिकार है?
यदि यह अधिकार तुझे परमेश्वर से प्राप्त है तो इसका हमें कोई प्रमाण

२. "उसके चेलों ने उस पर विश्वास किया।" ३ "यहूदियों"

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दिखा ।" १६ यीशु ने उत्तर दिया, "अच्छा ! मैं तुम्हारे लिए यह आश्चर्यकर्म करूंगा : परमेश्वर के इस भवन को गिरा दो तो मैं इसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा ।" २० उन्होंने आश्चर्य से कहा, "क्या ? जिस भवन को बनाने में छियालीस वर्ष लगे, उसे तू तीन ही दिन में बना देगा ?" २१ किन्तु "भवन" शब्द से उनका अर्थ अपनी देह से था । २२ चेलों को यह बात उस समय स्मरण आई जब मसीह मृत्यु के बाद तीसरे दिन जी उठे । तब उनकी समझ में आया कि यीशु ने पवित्र शास्त्र में से वह वचन कहा था जो उनके विषय में सच निकला ।

२३ मसीह ने फसह के त्यौहार के समय यरूशलेम में बहुत से आश्चर्यकर्म किए जिनको देख कर बहुतों ने विश्वास किया कि यही मसीह हैं । २४,२५ किन्तु यीशु को उन पर भरोसा नहीं था क्योंकि वह मनुष्यों को पूर्ण रीति से जानते थे । किसी को उन्हें यह बताने की आवश्यकता नहीं थी कि मनुष्य का मन कितनी जल्दी बदलता है ।

3 एक रात्रि को नीकुदेमुस नामक यहूदियों का धार्मिक अगुवा जो फरीसियों के सम्प्रदाय का था, यीशु से मिलने आया । उसने कहा, "महाशय, हम सभी जानते हैं कि हमें शिक्षा देने के लिए परमेश्वर ने आपको भेजा है । इसका प्रमाण आपके आश्चर्यकर्म हैं ।" ३ यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुमसे सच कहता हूं : जब तक तुम्हारा नया जन्म न हो, तुम परमेश्वर के राज्य में कदापि प्रवेश नहीं कर सकते ।" ४ "नया जन्म !" नीकुदेमुस ने आश्चर्य से पूछा, "इसका क्या अर्थ है ? क्या कोई बूढ़ा व्यक्ति माता के गर्भ में जाकर दोबारा जन्म ले सकता है ?" ५ यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुमसे सच कहता हूं : जब तक कोई व्यक्ति जल[1] और आत्मा से जन्म न ले, वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता । ६ मनुष्य तो केवल शारीरिक जन्म दे सकता है, किन्तु पवित्र आत्मा

१ अथवा, "शारीरिक जन्म पर्याप्त नहीं है । तुम्हें आत्मिक रूप से भी जन्म लेना है..." पानी से जन्म लेने का यही आशय है । मानव के जन्म की यह सामान्य विधि है ।

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

तुम्हें स्वर्ग से नया, आत्मिक जन्म दे सकता है । ७ अतः मेरे कथन पर
आश्चर्य मत करो कि तुम्हें नया जन्म लेना आवश्यक है । ८ तुम वायु की
सनसनाहट सुन सकते हो लेकिन नहीं बता सकते कि वह कहां से आती
और कहां जाती है । इसी प्रकार आत्मा भी है । हम नहीं जानते कि वह
कब किसको स्वर्ग से नया जीवन देगा ।" ९ नीकुदेमुस ने पूछा, "श्रीमान,
इसका क्या अर्थ है ?" १०,११ यीशु ने उत्तर दिया, "तुम यहूदियों के
सम्मानित गुरु होकर भी इन बातों को नहीं समझ सकते ! मैंने जो सुना
और देखा, वही तुम्हें बता रहा हूं—और तो भी तुम मेरा विश्वास नहीं
करते । १२ ये बातें तो इस संसार की हैं । यदि तुम मेरी इन बातों का
विश्वास नहीं करते जो मनुष्यों के बीच हो रही हैं तो उन बातों का कैसे
विश्वास करोगे जो स्वर्ग में हो रही हैं । १३ क्योंकि केवल मैं ही वह स्वर्गीय
मनुष्य[2] हूं जो पृथ्वी पर आया और फिर स्वर्ग को लौटूंगा । १४ जैसे
मूसा ने जंगल में पीतल के बने हुए सांप को खम्भे पर लटकाया, वैसे ही
मैं भी अवश्य खम्भे पर चढ़ाया जाऊंगा , १५ ताकि जो कोई मुझ पर
विश्वास करे, वह अनन्त जीवन पाए ।

१६ क्योंकि परमेश्वर ने जगत से इतना अधिक प्रेम किया कि उसने
अपना एकलौता[3] पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह
नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए । १७ परमेश्वर ने अपने पुत्र को
संसार में दण्ड की आज्ञा देने के लिए नहीं परन्तु उसे बचाने के लिए भेजा
है । १८ जितने उद्धार प्राप्त करने के लिए उस पर विश्वास करते हैं वे
अनन्त दंड के भागी नहीं होंगे । परन्तु उस पर विश्वास न रखने वालों
का न्याय हो चुका और परमेश्वर के एकलौते पुत्र पर विश्वास न करने
के कारण उन पर दंड की आज्ञा भी हो चुकी है । १९ दंड का कारण यह
है: ज्योति स्वर्ग से इस संसार में आई परन्तु उन्होंने ज्योति से अधिक
अंधकार को प्रिय जाना, क्योंकि उनके कार्य बुरे थे । २० उन्होंने स्वर्गीय
ज्योति से घृणा की क्योंकि उन्हें अंधेरे में पाप करने की अभिलाषा थी ।
वे प्रकाश से दूर रहे क्योंकि उन्हें भय था कि कहीं उनके पाप प्रकट न हो
जाएं तथा उन पर दंड की आज्ञा हो । २१ परन्तु उचित कार्य करने वाले

२ मूलतः, "मनुष्य का पुत्र" ३ अथवा "परमेश्वर का अपूर्व पुत्र"

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
ज्योति के समीप आते हैं ताकि सब देखें कि वे परमेश्वर की इच्छानुसार कार्य कर रहे हैं।" २२ इसके पश्चात् यीशु तथा उनके शिष्य यरूशलेम से यहूदिया में आए और वहां कुछ दिन ठहर कर उन्होंने लोगों को बपतिस्मा दिया। २३,२४ बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना अब तक बन्दीगृह में नहीं थे वह शालेम के निकट एनोन में बपतिस्मा दे रहे थे, क्योंकि वहां बहुत पानी था।

२५ एक दिन किसी ने यूहन्ना के शिष्यों से यह कह कर वादविवाद आरम्भ किया कि यीशु का बपतिस्मा सर्वश्रेष्ठ[4] है। २६ इसलिए यूहन्ना के पास आकर उन्होंने कहा, "गुरु, यर्दन नदी के उस पार जिस व्यक्ति से आपने भेंट की—जिनको आपने मसीह कहा—वह भी बपतिस्मा दे रहे हैं। सब हमारे पास आने की अपेक्षा उन्हीं के पास जाते हैं।" २७ यूहन्ना ने कहा, "परमेश्वर स्वर्ग से प्रत्येक का कार्य निर्धारित करता है। २८ मेरा काम उस व्यक्ति के लिए मार्ग तैयार करना है ताकि सब उनके पास जाएं। तुम स्वयं जानते हो, मैंने कितनी स्पष्टता से तुमसे कहा कि मैं मसीह नहीं हूं। मैं केवल उनके आगे मार्ग तैयार करने के लिए यहां हूं। २९ मुख्य आकर्षण[5] की ओर लोग स्वभावतः खिंच जाते हैं—दुल्हिन वहीं जाएगी जहां उसका दूल्हा है। दूल्हे के मित्र दूल्हे के साथ आनन्द मनाते हैं। मैं दूल्हे का मित्र हूं और दूल्हे की सफलता देख कर आनन्दित हूं। ३० उन्हें दिन प्रतिदिन बढ़ना है और मुझे घटना है।

३१ "वह स्वर्ग से आए हैं और सबसे महान हैं। मैं संसार का हूं और इस संसार की वस्तुओं तक ही मेरा ज्ञान सीमित है। ३२ जो कुछ उन्होंने देखा और सुना है—वही हमसे कहते हैं परन्तु कितने थोड़े हैं जो उनके कथन पर विश्वास करते हैं। ३३,३४ उन पर विश्वास करने वाले समझ लेते हैं कि परमेश्वर सत्य का स्रोत है। क्योंकि उन्हें परमेश्वर ने भेजा है और वह परमेश्वर ही का सन्देश देते हैं क्योंकि वह परमेश्वर की आत्मा से परिपूर्ण हैं। ३५ परमेश्वर उनसे प्रेम रखता है क्योंकि वह उसके पुत्र हैं। परमेश्वर ने सब वस्तुएं इन्हीं को सौंप दी हैं। ३६ जो उद्धार के लिए परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करते हैं—अनन्त जीवन उनका है।

४ मूलतः, "शुद्धि के विषय में" ५ तात्पर्य यही है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
जो उन पर विश्वास नहीं करते और उनकी आज्ञा नहीं मानते वे स्वर्ग
को कभी नहीं देखेंगे, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उन पर बना रहता है।"

४ १,२ जब प्रभु यीशु को मालूम हुआ कि फरीसियों ने सुना है कि
यूहन्ना की अपेक्षा अधिक लोग उनसे बपतिस्मा लेने और उनके
शिष्य बनने को आते हैं—(यद्यपि यीशु स्वयं नहीं बल्कि उनके चेले
बपतिस्मा देते थे)—३ तो उन्होंने यहूदिया को छोड़ दिया और गलील के
प्रान्त में आए। ४ मार्ग में उन्हें सामरिया से होकर जाना आवश्यक था।
५,६ लगभग दोपहर के समय सूखार गांव के निकट पहुंच कर वह याकूब के
कुएं पर आए जो उस भूखण्ड में स्थित है जिसे याकूब ने अपने पुत्र यूसुफ
को दिया था। यीशु तेज़ धूप में चलने के कारण थके हुए थे इसलिए
उस कुंए पर बैठ गए।

७ उसी समय एक सामरी स्त्री जल भरने को आई और यीशु ने
उससे पीने के लिए पानी मांगा। ८ वह उस समय अकेले थे। उनके चेले
गांव में भोजन मोल लेने गए थे। ९ स्त्री को आश्चर्य हुआ कि कोई यहूदी
"नीच सामरी" से कुछ मांगे (साधारणतः यहूदी लोग सामरी लोगों से
बात तक नहीं करते थे।), उसने यीशु से ऐसा कह भी दिया। १० उन्होंने
उत्तर दिया, "यदि तू केवल इतना ही जानती कि परमेश्वर के पास तुम्हारे
लिए कैसा अद्भुत वरदान है और यह भी कि मैं कौन हूं तो मुझसे जीवन
का जल मांगती।" ११ उसने कहा, "परन्तु आपके पास तो रस्सी और
बाल्टी तक नहीं है और यह कुआं अत्यन्त गहरा है। यह जीवन का जल
आपके पास कहां से आएगा? १२ और फिर क्या आप हमारे पूर्वज
याकूब से बड़े हैं? इस कुंए के पानी को उन्होंने, उनके पुत्रों और पशुओं
ने पिया, इससे बढ़िया पानी आप कैसे दे सकते हैं?" १३ यीशु ने उत्तर
दिया कि लोग शीघ्र ही इस जल को पीकर फिर से प्यासे हो जाते हैं।
१४ उन्होंने कहा, "परन्तु जो जल मैं देता हूं वह उनमें शाश्वत सोता बन
जाता है और उनमें से अनन्त जीवन का जल बहता रहता है।" १५

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)
स्त्री ने कहा, "महाशय, कृपया मुझे भी उसी जल में से दीजिये। तब मैं फिर कभी प्यासी नहीं होऊंगी और मुझे रोज़ इतनी दूर नहीं आना पड़ेगा।"

१६ यीशु ने उससे कहा, "जाकर अपने पति को बुला ला।" १७,१८ स्त्री ने उत्तर दिया, "परन्तु मैं विवाहित नहीं हूं।" यीशु ने कहा, "हां सच है। तेरे पांच पति हो चुके हैं और जिसके साथ तू अभी रहती है उससे भी तेरा विवाह नहीं हुआ है! तूने बिलकुल ठीक कहा है।" १९ स्त्री ने कहा, "महाशय, आप अवश्य ही भविष्यद्वक्ता हैं! २० परन्तु मुझे बताइए कि आप यहूदी लोग क्यों कहते हैं कि आराधना का एकमात्र स्थान यरूशलेम है जबकि हम सामरी यह दावा करते हैं कि यहीं (गिरिज्जीम पर्वत[1] पर), हमारे पूर्वज आराधना करते थे?" २१-२४ यीशु ने उत्तर दिया, "हे नारी वह समय आ रहा है जब किसी को चिंता नहीं होगी। कि पिता का भजन यहां करें अथवा यरूशलेम में। यह महत्वपूर्ण नहीं कि हम कहां आराधना करते हैं, परन्तु महत्वपूर्ण यह है कि हम आराधना कैसे करते हैं—क्या हमारी आराधना—आत्मीयता और सच्चाई से होती है? क्या हमें पवित्र आत्मा की सहायता मिलती है। क्योंकि परमेश्वर आत्मा है और उसकी आराधना करने के लिए पवित्र आत्मा की आवश्यकता है। पिता हमसे इसी प्रकार की आराधना चाहता है। किन्तु तुम सामरी उसके विषय में बहुत कम जानते हो और अज्ञानता से आराधना करते हो जबकि हम यहूदी उसके विषय में सब कुछ जानते हैं क्योंकि उद्धार यहूदियों से प्राप्त होगा।" २५ स्त्री ने कहा, "हां, इतना तो मैं जानती हूं कि मसीह आएंगे—जिन्हें ख्रीष्ट करते हैं—जब वह आएगे तो हमें सब कुछ समझाएंगे।" २६ तब यीशु ने उसे बताया, "मैं मसीह हूं।"

२७ उसी समय उनके चेले वहां पहुंचे और प्रभु को एक स्त्री के साथ बातें करते देख वे चकित हुए परन्तु किसी ने नहीं पूछा कि यीशु उससे क्यों और क्या बातें कर रहे थे। २८,२९ तब वह स्त्री कुएं पर अपना घड़ा छोड़ कर गांव को वापिस लौटी। उसने सब लोगों से कहा, "आओ और एक मनुष्य से मिलो, जिन्होंने सब कुछ जो मैंने किया, मुझे बता दिया। कहीं यही तो मसीह नहीं हैं?" ३०

१ तात्पर्य यही है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

इसलिए गांव से निकल कर भीड़ उन्हें देखने के लिए आने लगी।
३१ इसी बीच चेलों ने यीशु से भोजन करने के लिए निवेदन किया।
३२ उन्होंने कहा, "नहीं मेरे पास ऐसा भोजन है जिसके बारे में तुम कुछ
नहीं जानते।" ३३ चेले एक दूसरे से पूछने लगे, "कौन उनके लिए भोजन
लाया ?" ३४ तब यीशु ने समझाया: "जिस परमेश्वर ने मुझे भेजा है
उसकी इच्छानुसार उसका कार्य करना ही मेरा भोजन है। ३५ क्या
तुम सोचते हो कि चार महीनों तक अभी कटनी नहीं प्रारम्भ होगी ?
अपने चारों ओर दृष्टि करो। हमारे चहुं-ओर मनुष्य के आत्मा रूपी
बहुत से खेत पके खड़े हैं और अब कटनी के लिए तैयार हैं। ३६ फसल
काटने वालों को अच्छी मज़दूरी मिलेगी। वे अनन्त आत्माओं को स्वर्गीय
भंडार में जमा करेंगे। इससे बीज बोने वाले और फसल काटने वाले
दोनों को बहुत सुख मिलेगा। ३७ यह सच है कि बोता कोई है और काटता
कोई और। ३८ जहां तुमने नहीं बोया वहां मैंने तुम्हें फसल काटने भेजा,
दूसरों ने कार्य किया और तुम्हें उसका प्रतिफल मिला।"
३९ गांव के बहुत से सामरियों ने स्त्री का यह कथन सुना, "उसने
वह सब कुछ जो मैंने किया मुझे बता दिया।" और विश्वास किया कि
वह मसीह हैं। ४० इसलिए जब लोगों ने उन्हें कुएं पर देखा, तो उनसे
अपने गांव में ठहरने के लिए विनती की। और यीशु दो दिन तक उनके
साथ ठहरे। ४१ और उनके वचन को सुनकर बहुत से लोगों ने विश्वास
किया। ४२ उन्होंने स्त्री से कहा, "अब हम केवल तेरे कहने ही से
विश्वास नहीं करते क्योंकि हमने स्वयं उनका वचन सुन लिया है। वास्तव
में वही जगत के उद्धारकर्ता हैं।"
४३ दो दिन वहां ठहर कर वह गलील को गए। ४४ क्योंकि यीशु
का कहना था कि "भविष्यद्वक्ता अपने देश के सिवाय सब जगह सम्मान
पाता है!" ४५ निश्चय ही गलीलियों ने हर्ष से उनका स्वागत किया,
क्योंकि वे फसह के पर्व के समय यरूशलेम में थे और उन्होंने उनके कुछ
आश्चर्यकर्म भी देखे थे।[२]
४६,४७ गलील की यात्रा के समय वह काना नगर में पहुंचे जहां

२ यूहन्ना २:२३ पढ़िये।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उन्होंने पानी को दाखरस बनाया था। जब वह वहां थे, कफरनहूम शहर के एक सरकारी अफ़सर ने, जिसका पुत्र बहुत बीमार था, सुना कि यीशु यहूदिया से आकर गलील में यात्रा कर रहे हैं। वह काना में जाकर यीशु से मिला। उसने यीशु से बिनती की "कफरनहूम में मेरे साथ आकर मेरे पुत्र को चंगा कीजिए, क्योंकि वह मृत्यु शैय्या पर है।" ४८ यीशु ने पूछा, "क्या बिना मेरे आश्चर्यकर्मों को देखे तुम मुझ पर विश्वास नहीं करोगे?" ४९ अफ़सर ने विनती की "महाशय, कृपया मेरे पुत्र के मरने से पहले आइए।" ५० तब यीशु ने उससे कहा, "घर जा। तेरा पुत्र चंगा हो गया है।" उस व्यक्ति ने यीशु पर विश्वास किया और घर की ओर चल दिया। ५१ वह मार्ग ही में था कि उसके नौकर मिले। उन्होंने ख़बर दी कि सब कुछ ठीक है—आपका पुत्र चंगा हो गया है। ५२ उन्होंने पूछा कि लड़का किस समय से अच्छा होने लगा था। उन्होंने उत्तर दिया, "कल दोपहर में लगभग एक बजे जब एकाएक उसका बुखार उतर गया था।" ५३ तब पिता समझ गया कि यह वही क्षण था जब यीशु ने उससे कहा था, "तेरा पुत्र चंगा हो गया है।" अफ़सर और उसके पूरे घराने ने विश्वास किया कि यीशु ही मसीह हैं। ५४ यहूदिया से लौटने के पश्चात यीशु ने गलील में यह दूसरा आश्चर्यकर्म कर दिखलाया।

५ इसके पश्चात यहूदियों के धार्मिक त्यौहार को मनाने के लिए यीशु यरूशलेम को लौट आए।

२ शहर में भेड़ फाटक के पास बेतहसदा कुंड था, जिसके पांच ओसारे थे। ३ इन ओसारों में बीमारों, लंगड़ों और लकवे से मारों की भीड़ (पानी के हिलने की प्रतीक्षा में) रहती थी। ४ (क्योंकि समय समय पर परमेश्वर का स्वर्गदूत आकर पानी को हिलाता था और हिलते ही पानी में सर्वप्रथम उतरने वाला व्यक्ति चंगा हो जाता था।)[1] ५ वहां पड़े हुए व्यक्तियों में से एक व्यक्ति अड़तीस वर्षों से रोगी था। ६ जब यीशु ने उसे देखा और उन्हें मालूम हुआ कि यह बहुत वर्षों से बीमार है, तो

१ कोष्टक के वाक्यों को अनेक प्राचीन हस्तलिपियों में छोड़ दिया गया है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
उन्होंने उससे पूछा, "क्या तुम चंगे होना चाहते हो ?" ७ बीमार ने कहा,
"मैं लाचार हूं । मेरा कोई नहीं है जो पानी के हिलते ही मेरी सहायता
करे । मेरे वहां जाने की कोशिश करते करते कोई न कोई दूसरा मुझसे
पहले उतर जाता है ।" ८ यीशु ने उससे कहा, "खड़ा हो, अपना बिस्तर
उठा और घर जा ।"

९ वह व्यक्ति तुरन्त चंगा हो गया । उसने बिस्तर लपेटा और चलने
लगा । किन्तु वह सब्त का दिन था जब यह आश्चर्यकर्म हुआ था । १०
इसलिए यहूदी अगुवों ने विरोध किया । उन्होंने चंगे व्यक्ति से कहा,
"तुम सब्त के दिन काम नहीं कर सकते । बिस्तर उठा कर ले जाना नियम
के विरुद्ध है ।" ११ उसका उत्तर था, "जिस व्यक्ति ने मुझे चंगा किया,
उसी ने मुझ से ऐसा करने को कहा ।" १२ उन्होंने अधिकार पूर्वक पूछा,
"ऐसी बात किसने कही ?" १३ वह व्यक्ति नहीं जानता था और यीशु
भीड़ में लापता हो गए थे । १४ किन्तु कुछ समय बाद यीशु उससे मन्दिर
में मिले और बोले, "अब तुम अच्छे हो गए हो, पहले[2] जैसा पाप का जीवन
मत बिताना, नहीं तो इससे भी अधिक कष्ट तुम पर आ पड़ेगा ।"
१५ तब वह व्यक्ति यहूदी अगुवों से मिलने गया और उसने उन्हें बताया
कि वह यीशु थे जिन्होंने मुझे अच्छा किया । १६ अतः वे यीशु को सब्त
का तोड़ने वाला कहकर सताने लगे । १७ किन्तु यीशु ने उत्तर दिया,
"मेरा पिता सदैव भलाई[3] करता है, और मैं उसके उदाहरण पर चलता
हूं ।" १८ तब यहूदी अगुवे उन्हें मार डालने का और भी अधिक प्रयत्न
करने लगे क्योंकि सब्त का नियम तोड़ने के साथ ही उन्होंने परमेश्वर को
अपना पिता कहा था और यह कह कर स्वयं को परमेश्वर के बराबर
ठहराया था ।

१९ यीशु ने उत्तर दिया, "पुत्र स्वयं कुछ नहीं कर सकता । वह
केवल वही करता है जो पिता को करते देखता है और उसी के समान
काम करता है । २० क्योंकि पिता पुत्र से प्रेम रखता है और सब कुछ
जो वह करता है, उसे बताता है, और पुत्र इस व्यक्ति की चंगाई से कहीं

---

२ आशय यही है । मूलतः, "फिर से पाप मत करना ।" ३ आशय यही है । मूलतः, "मेरा पिता अब तक काम करता है, और मैं भी काम करता हूं ।"

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बढ़कर आश्चर्यकर्म करेगा। २१ जिस प्रकार पिता मरे हुओं को जिलाता है उसी प्रकार पुत्र भी जिसको चाहे मुर्दों में से जिलाता है। २२ और पिता ने न्याय का सब काम पुत्र को सौंप दिया है। २३ ताकि जैसे वे पिता का आदर करते हैं वैसे ही सब पुत्र का भी सम्मान करें। परन्तु यदि तुम परमेश्वर के पुत्र का आदर नहीं करते, जिसे उसने तुम्हारे पास भेजा, तो निश्चय ही तुम पिता का भी आदर नहीं करते।

२४ "मैं निश्चय ही तुमसे कहता हूं कि जो मेरा संदेश सुनता है और परमेश्वर पर विश्वास करता है जिसने मुझे भेजा, अनन्त जीवन उसका है। उस पर उसके पापों के दंड की आज्ञा कभी नहीं होगी किन्तु वह तो मृत्यु से निकलकर जीवन में प्रवेश कर चुका है। २५ मैं गम्भीरतापूर्वक कहता हूं कि वह समय आ रहा है, बल्कि आ चुका है जब मेरा अर्थात परमेश्वर के पुत्र का स्वर, मुर्दे भी सुनेंगे—और जितने सुनेंगे वे जीवित रहेंगे। २६ पिता में स्वयं जीवन है और उसने पुत्र को भी स्वयं में जीवन रखने का अधिकार दिया है। २७ और वह समस्त मानव जाति के पापों का न्याय करेगा क्योंकि वह मनुष्य का पुत्र है। २८ इतना आश्चर्य मत करो। वास्तव में वह समय आ रहा है जब मुर्दे अपनी कब्रों में परमेश्वर के पुत्र का स्वर सुनेंगे, २९ और पुनः जीवित हो उठेंगे--जिन्होंने भले कार्य किए हैं, वे अनन्त जीवन के लिए, और जिन्होंने बुराई में जीवन व्यतीत किया है, वे न्याय के लिए।

३० "किन्तु मैं बिना पिता की सलाह लिए कोई कार्य नहीं करता। उसकी आज्ञानुसार ही न्याय करता हूं। और मेरा न्याय पूर्णतः निष्पक्ष और सच्चा है क्योंकि वह केवल मेरा नहीं परन्तु परमेश्वर की इच्छानुसार है, जिसने मुझे भेजा है। ३१ जब मैं अपने विषय में दावा करता हूं तो तुम उस पर अविश्वास करते हो, ३२,३३ परन्तु दूसरा, हां, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला[४] मेरे लिए ये दावे करता है। तुमने उसका संदेश सुना और मैं जानता हूं कि उसने मेरे विषय में सब सच ही कहा है! ३४ किन्तु मेरी सबसे सच्ची गवाही किसी मनुष्य की

४ तात्पर्य यही है। तो भी अधिकांश टीकाकारों का विश्वास है कि इस पद में पिता की साक्षी की ओर संकेत है। पद ३७ देखिए।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ओर से नहीं दी गई, यद्यपि मैंने तुम्हें यूहन्ना की साक्षी का स्मरण दिलाया ताकि तुम मुझ पर विश्वास करो और उद्धार पाओ। ३५ यूहन्ना कुछ समय तक प्रकाश देता रहा, और उससे लाभ पाकर तुम आनन्दित हुए। ३६ परन्तु मेरी साक्षी यूहन्ना की साक्षी से बढ़कर है। मेरा अर्थ मेरे आश्चर्यकर्मों से है जिनके करने की आज्ञा पिता ने मुझे दी है। इनसे सिद्ध होता है कि परमेश्वर ने मुझे भेजा है। ३७ और पिता ने स्वयं मेरे विषय में साक्षी दी है, यद्यपि वह व्यक्तिगत रीति से तुम पर प्रगट नहीं हुआ और न ही प्रत्यक्ष रूप से उसने तुम से बातें कीं। ३८ परन्तु तुम उसकी अनसुनी करते हो क्योंकि मुझ पर विश्वास नहीं करते–जिसे परमेश्वर का संदेश लेकर तुम तक भेजा गया है। ३९ तुम धर्मशास्त्र में खोजते हो क्योंकि विश्वास करते हो कि वह तुम्हें अनन्त जीवन देता है। और धर्मशास्त्र में मेरी ओर संकेत है। ४० तौभी तुम अनन्त जीवन पाने के लिए मेरे पास नहीं आते। ४१, ४२ तुम्हारे मानने न मानने से मुझ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि मुझे अच्छी तरह से मालूम है कि तुम में परमेश्वर का प्रेम नहीं है। ४३ मुझे मालूम है क्योंकि मैं अपने पिता के नाम से तुम्हारे पास आया हूं और तुम मुझे ग्रहण नहीं करते, यद्यपि तुम उनको सहज ग्रहण कर लेते हो जो परमेश्वर की ओर से तो नहीं भेजे गए परन्तु अपने ही नाम से आते हैं। ४४ कोई आश्चर्य नहीं कि तुम विश्वास नहीं कर सकते। क्योंकि तुम प्रसन्नता से एक दूसरे का तो आदर करते हो, परन्तु उस आदर की परवाह नहीं करते जो केवल एकमात्र परमेश्वर से प्राप्त होता है! ४५ तौभी मैं पिता के समक्ष इस संबंध में तुम पर दोष नहीं लगाऊंगा—किन्तु मूसा तुम्हें दोषी ठहराएगा जिसके नियमों द्वारा तुम स्वर्ग की आशा रखते हो। ४६ क्योंकि तुमने मूसा पर भी विश्वास नहीं किया है। उसने तो मेरे विषय में लिखा परन्तु तुम उस पर विश्वास नहीं करते, इसलिए मुझ पर भी विश्वास नहीं करते। ४७ जब तुम उसकी लिखी हुई बातों का ही विश्वास नहीं करते तो कोई आश्चर्य नहीं कि मेरा भी विश्वास नहीं करते।"

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

६ इसके बाद, यीशु गलील की झील (जो तिबिरियास की झील भी
कहलाती है) के पार गए। २-५ जहां भी वह जाते थे एक बड़ी भीड़
(उनमें से अनेक लोग यरूशलेम की यात्रा पर फसह का वार्षिक त्यौहार
मनाने जा रहे थे।) उनके पीछे हो लेती थी, ताकि उन्हें बीमारों को चंगा
करते देखें। जब यीशु पहाड़ पर चढ़ कर अपने चेलों के साथ बैठ गए,
उन्होंने लोगों की एक बड़ी भीड़ को पहाड़ पर चढ़ते देखा जो उनकी खोज
में थी। उन्होंने फिलिप्पुस की ओर मुड़कर कहा, "फिलिप्पुस, हम
इतने लोगों के लिए कहां से भोजन ख़रीद सकते हैं?" ६ (वह फिलि-
प्पुस को परख रहे थे क्योंकि उन्हें पहले ही मालूम था कि क्या करना
है!) ७ फिलिप्पुस ने उत्तर देते हुए कहा, "उन्हें खाना खिलाने के लिए
बहुत धन[1] की आवश्यकता होगी!" ८, ९ तब शमौन पतरस के भाई
अन्द्रियास ने कहा, "यहां एक लड़का है जिसके पास जौ की पांच रोटियां
और दो मछलियां हैं! परन्तु इस भीड़ को उनसे क्या लाभ?" १०
यीशु ने आज्ञा दी, "प्रत्येक से बैठने को कहो।" और सब (जिनमें सिर्फ
पुरुषों की ही संख्या लगभग पांच हज़ार थी), हरी घास पर बैठ गए। ११
तब यीशु ने रोटी ली और परमेश्वर को धन्यवाद दिया और लोगों को
बांटने के लिए दे दी। बाद में इसी प्रकार मछलियां भी बंटवा दीं। जब
सब खाकर तृप्त हो गए १२ तब यीशु ने शिष्यों से कहा, "बचे हुए
टुकड़ों को उठा लो, कि कुछ नष्ट न हो।" १३ और बचे हुए टुकड़ों की
बारह टोकरियां भर गईं! १४ जब लोगों ने समझ लिया कि बहुत बड़ा
आश्चर्यकर्म हुआ है तो अचरज से कहा, "निश्चय ही, यही वह भविष्य-
द्वक्ता हैं जिनकी हम बाट जोहते रहे हैं!"

१५ यीशु ने समझ लिया कि वे उन्हें बलपूर्वक ले जाकर अपना
राजा बनाना चाहते हैं इसलिए वह पहाड़ पर अकेले ही और अधिक ऊंचाई
पर चले गए।

१६ संध्या समय उनके चेले नीचे उतर कर झील के किनारे उनकी
प्रतीक्षा करने लगे। १७ परन्तु जब अंधेरा हो गया और यीशु भी नहीं

---

१ मूलतः, २०० दीनार। १ दिनार एक दिन का पारिश्रमिक था।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
लौटे, तो वे नाव पर चढ़ कर झील के उस पार कफरनहूम की ओर बढ़ने लगे। १८, १९, जब वे नाव खेते आगे बढ़ रहे थे तो शीघ्र ही आंधी आई और समुद्र अशान्त हो गया। वे तीन या चार मील ही गए होंगे कि अचानक उन्होंने यीशु को नाव की ओर पानी पर चलकर आते देखा! वे अत्यन्त डर गए। २० परन्तु यीशु ने पुकार कर कहा कि डरो मत। २१ तब वे उन्हें नाव पर चढ़ाने के लिए तैयार हुए, और नाव एकदम उस स्थान पर पहुंच गई जहां वे जा रहे थे!

२२, २३ दूसरे दिन झील के इसी पार यीशु[२] को देखने के लिए भीड़ एकत्र होने लगी। क्योंकि वे जानते थे कि यीशु और उनके शिष्य एक साथ वहां तक आए थे और चेले यीशु को छोड़कर अपनी नाव पर चले गए थे। तिबिरियास की कई छोटी नावें किनारे पर थीं। २४ इसलिए जब लोगों ने देखा कि यीशु वहां नहीं हैं, न ही उनके चेले हैं, तो वे नावों पर चढ़ कर उनकी खोज में कफरनहूम आए।

२५ जब वे वहां पहुंचे और उनसे मिले तो उन्होंने कहा, "महाशय, आप यहां कैसे आए?" २६ यीशु ने उत्तर दिया, "सच तो यह है कि तुम मेरा साथ इसलिए चाहते हो क्योंकि मैंने तुम्हें खाना खिलाया, इसलिए नहीं कि तुम मुझ पर विश्वास करते हो। २७ परन्तु तुम्हें भोजन जैसी नाशवान वस्तु की इतनी चिन्ता कदापि नहीं करनी चाहिए। हां, अनन्त जीवन को प्राप्त करने के लिए परिश्रम करो, जिसे मैं ही जो स्वर्ग[३] से पृथ्वी पर आया, तुम्हें दे सकता हूं। क्योंकि इसी उद्देश्य से परमेश्वर पिता ने मुझे भेजा है।" २८ उन्होंने पूछा, "हम परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए क्या करें?" २९ यीशु ने उनको बताया, "परमेश्वर की यह इच्छा है कि तुम उस पर विश्वास करो जिसे उसने भेजा है।" ३०, ३१ उन्होंने उत्तर दिया, "यदि आप चाहते हैं कि हम आप पर विश्वास करें कि आप मसीह हैं तो आपको हमें और आश्चर्यकर्म दिखाना चाहिए हमें प्रतिदिन भोजन दीजिए जैसे हमारे बाप-दादों को जंगल की यात्रा करते समय मिला! जैसे पवित्र शास्त्र में लिखा है, 'मूसा ने उन्हें खाने

---

२ तात्पर्य यही है। ३ मूलतः, "मनुष्य का पुत्र" तात्पर्य यही है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
के लिए स्वर्ग से रोटी दी'।" ३२ यीशु ने कहा, "मूसा ने उन्हें रोटी नहीं दी! मेरे पिता ने दी।[4] और अब वह तुम्हें स्वर्ग से सच्ची रोटी देता है। ३३ यह सच्ची रोटी वह व्यक्ति है जिसे परमेश्वर ने स्वर्ग से भेजा और वही संसार को जीवन देता है।" ३४ उन्होंने कहा, "महाशय, हमें जीवन भर प्रतिदिन यह रोटी दीजिए!"

३५ यीशु ने उत्तर दिया, "जीवन की रोटी मैं हूं। मेरे पास आने वाला कभी भूखा न होगा। मुझ पर विश्वास करने वाला कभी प्यासा न होगा। ३६ किन्तु यही तो कठिनाई है जैसा मैंने तुमसे पहले कहा, "यद्यपि तुमने मुझे देखा है तो भी विश्वास नहीं किया। ३७ लेकिन कुछ लोग मेरे पास आएंगे—जिन्हें पिता ने मुझे दिया है—और मैं उन्हें कभी अस्वीकार नहीं करूंगा। ३८ क्योंकि मैं यहां स्वर्ग से अपनी इच्छा नहीं बल्कि पिता की इच्छा पूरी करने आया हूं जिसने मुझे भेजा है। ३९ और परमेश्वर की यही इच्छा है कि जितनों को उसने मुझे दिया है उनमें से मैं एक को भी न खोऊं परन्तु मैं अन्तिम दिन में उन्हें अनन्त जीवन के लिए फिर जिलाऊंगा। ४० क्योंकि मेरे पिता की यह इच्छा है कि उसके पुत्र को देखने वाले और उस पर विश्वास करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अनन्त जीवन मिले और मैं उसे अन्तिम दिन फिर जिला उठाऊं।

४१ तब यहूदी उनके विरुद्ध कुड़कुड़ाने लगे क्योंकि उन्होंने स्वर्गीय रोटी होने का दावा किया था। ४२ "क्या?" उन्होंने चकित होकर कहा, "क्या यह केवल यूसुफ का पुत्र यीशु नहीं, जिसके माता पिता को हम जानते हैं? यह क्या है जो वह कह रहा है कि वह स्वर्ग से उतरा है?" ४३ परन्तु यीशु ने उत्तर दिया, "मेरे इस कथन पर आपस में मत कुड़कुड़ाओ, ४४ क्योंकि कोई उस समय तक मेरे पास नहीं आ सकता जब तक पिता जिसने मुझे भेजा, मेरी ओर आकर्षित न करे और अन्तिम दिन में, मैं उन सभों को जिलाऊंगा। ४५ जैसा पवित्र शास्त्र में लिखा है, 'वे सब परमेश्वर की ओर से सिखाए हुए होंगे।" जिनसे पिता बातें करता है और जो उससे सत्य को जानेंगे, वही मेरे पास खिच आएंगे। ४६ (यह

४ तात्पर्य यही है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नहीं कि कोई वास्तव में पिता को देखता है, क्योंकि केवल मैंने ही उसे देखा है।) ४७ मैं पूर्णतः सच्चाई से यह कहता हूं—जो कोई मुझ पर विश्वास करता है अनन्त जीवन उसका हो चुका है। ४८ हां, जीवन की रोटी मैं हूं! ४९ उस रोटी में कोई वास्तविक जीवन[५] नहीं था, जो जंगल में तुम्हारे बाप दादों को आकाश से दी गई, क्योंकि वे सब मर गए। ५०, ५१ किन्तु ऐसी भी वस्तु है जैसे स्वर्गीय रोटी जो प्रत्येक खाने वाले को अनन्त जीवन देती है। और मैं ही वह जीवित रोटी हूं जो स्वर्ग से उतरी। जो इस रोटी को खाएगा वह सदैव जीवित रहेगा, यह रोटी मेरा मांस है जो मानवमात्र के छुटकारे के लिए दिया गया है।

५२ तब यहूदी आपस में वाद विवाद करने लगे कि उसके कथन का क्या अर्थ है। उन्होंने पूछा, "यह व्यक्ति हमें अपना मांस खाने को कैसे दे सकता है?" ५३ इसलिए यीशु ने पुनः कहा, "मैं पूर्ण सच्चाई से यह कहता हूं : जब तक तुम महिमायुक्त मनुष्य[६] का मांस न खाओ और उसका लोहू न पीओ, तुम स्वयं में अनन्त जीवन नहीं पा सकते। ४५ किन्तु जो कोई मेरा मांस खाए और मेरा लोहू पिए, वही अनन्त जीवन प्राप्त करता है, और अन्तिम दिन में, मैं उसे जिलाऊंगा। ५५ क्योंकि मेरा मांस वास्तविक भोजन है और मेरा लोहू पीने की वास्तविक वस्तु है। ५६ जो कोई मेरा मांस खाए और लोहू पिए वह मुझ में बना रहेगा, और मैं उसमें। ५७ मैं जीवित पिता की सामर्थ से जीवित हूं, जिसने मुझे भेजा। इसी प्रकार जितने मुझे खाएंगे वे मेरे कारण जीवित रहेंगे। ५८ मैं ही वह सच्ची रोटी हूं जो स्वर्ग से उतरी! और जो कोई इस रोटी को खाएगा वह सदैव जीवित रहेगा, और नहीं मरेगा जैसा तुम्हारे बाप दादे मर गए—यद्यपि उन्होंने वह रोटी खाई जो उन्हें स्वर्ग से प्राप्त हुई थी।" ५९ (कफरनहूम के आराधनालय में उन्होंने यह संदेश दिया।)

६० उनके शिष्यों ने भी कहा, "इन बातों को समझना बड़ा कठिन है। इनका अर्थ कौन बता सकता है?" ६१ यीशु ने स्वतः मालूम कर लिया कि उनके शिष्य भी कुड़कुड़ा रहे हैं और उनसे कहा, "क्या इससे

---

५ तात्पर्य यही है। ६ तात्पर्य यही है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
तुम्हें ठोकर लगती है ? ६२ फिर यदि तुम मुझ मनुष्य के पुत्र को स्वर्ग पर लौटते देखोगे तो क्या सोचोगे ? ६३ केवल पवित्र आत्मा ही अनन्त जीवन[7] देता है । एक बार जन्मे (शारीरिक जन्म)[8] लोगों को यह वरदान कभी प्राप्त नहीं होगा । परन्तु अब मैंने तुम्हें बता दिया है कि इस सच्चे आत्मिक जीवन को कैसे प्राप्त करो । ६४ परन्तु तुम में से कुछ लोग मुझ पर विश्वास नहीं करते ।" (क्योंकि यीशु आरम्भ से जानते थे कि कौन विश्वास नहीं करते और कौन उन्हें पकड़वाएंगे । ६५ और उन्होंने कहा, "यही मेरा अर्थ था जब मैंने कहा कि कोई उस समय तक मेरे पास नहीं आ सकता जब तक पिता उसे मेरे पास न खींचे ।"

६६ इसी बात पर उनके अनेक शिष्य उन्हें छोड़कर लौट गए । ६७ तब यीशु ने बारहों की ओर मुड़कर कहा, "क्या तुम भी जा रहे हो ?" ६८ शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "प्रभु, हम किसके पास जाएं ? अनन्त जीवन की बातें तो केवल आपके ही पास हैं । ६९ और हमें आप पर विश्वास है और जानते हैं कि आप परमेश्वर के पवित्र पुत्र हैं ।" ७० तब यीशु ने कहा, "मैंने तुम बारहों को चुना, और तुम में से एक शैतान है ।" ७१ (वह शमौन इस्करियोति के पुत्र यहूदा के विषय में कह रहे थे, जो बारह चेलों में से एक था । वह यीशु को पकड़वाने को था ।)

७ इससे पश्चात यीशु गलील को गए, और गांव गांव में फिरते रहे, क्योंकि वह यहूदियों से दूर रहना चाहते थे जहां यहूदी अगुवे उन्हें मार डालने की योजना बना रहे थे । २ किन्तु शीघ्र ही वह समय निकट आया जब यहूदी लोग अपना वार्षिक उत्सव अर्थात मंडपों का पर्व्व मनाने वाले थे । ३ और यीशु के भाइयों ने उनसे त्यौहार मनाने के लिए यहूदिया जाने का आग्रह किया । उन्होंने ठट्ठा करके कहा, "वहां जाइए जहां अधिक लोग आपके आश्चर्यकर्म देख सकें ! ४ इस प्रकार छिपे रह कर

---

७ मूलतः, "आत्मा तो जीवनदायक है ।" ८ यूहन्ना १ : १३ पढ़िए । मूलतः "शरीर से कुछ लाभ नहीं ।"

Digitization by American Academy of Indic Studies- AAIS(USA)
आप प्रसिद्ध नहीं हो सकते ! यदि आप इतने महान हैं, तो संसार को दिखा
दीजिए !" ५ क्योंकि उनके भाई भी उन पर विश्वास नहीं करते थे ।
६ यीशु ने उत्तर दिया, "मेरे जाने का अभी उपयुक्त समय नहीं है । परन्तु
तुम कभी भी जा सकते हो और उससे कुछ अन्तर नहीं पड़ेगा, ७ क्योंकि
संसार तुमसे घृणा नहीं करता, परन्तु मुझ से करता है, क्योंकि मैं पाप
और बुराई के संबंध में उस पर दोष लगाता हूं । ८ तुम चले जाओ, और
मैं बाद में[1] आऊंगा जब उपयुक्त समय होगा ।" ९ अतः वह गलील में ही
रह गए ।

१० किन्तु भाइयों के उत्सव में चले जाने के पश्चात वह भी गए,
किन्तु गुप्त रूप से, लोगों की दृष्टि से बचकर । ११ यहूदी अगुवों ने
उत्सव में उन्हें खोजने की कोशिश की और पूछते रहे कि क्या किसी ने
उन्हें देखा है । १२ लोगों की भीड़ में उनके विषय में बहुत ही चर्चा हो
रही थी । कुछ कहते थे, "वह अद्भुत और महान व्यक्ति हैं," जबकि
दूसरे कहते थे, "नहीं, वह लोगों की आंखों में धूल झोंक रहा है ।" १३
किन्तु उनके विषय में खुलकर बातें करने का साहस किसी में न था क्योंकि
वे यहूदी अगुवों के बदला लेने से डरते थे ।

१४ किन्तु उत्सव के आधे दिन व्यतीत होने पर यीशु ने मन्दिर में
जाकर सब के समक्ष उपदेश दिया । १५ उनकी बातें सुन कर यहूदी
अगुवों ने विस्मय किया । उन्होंने कहा, "इन्होंने हमारे विद्यालय में
कभी शिक्षा ग्रहण नहीं की फिर इन्हें इतना ज्ञान कैसे है ?" १६ इसलिए
यीशु ने उन्हें बताया, इस उपदेश के विचार मेरे नहीं किन्तु परमेश्वर
के हैं जिसने मुझे भेजा । १७ यदि तुममें से कोई वास्तव में परमेश्वर की
इच्छा पूर्ण करने के लिए निश्चयबद्ध हो, तो वह अवश्य जानेगा कि मेरी
शिक्षा परमेश्वर की ओर से है अथवा केवल मेरी ओर से । १८ जो कोई
अपने विचार प्रस्तुत करता है वह स्वयं आदर पाने की खोज में है, किन्तु
जो अपने भेजने वाले के आदर की खोज में है वही भला और
सच्चा व्यक्ति है । १९ तुम में से कोई भी मूसा की विधियों का पालन

---

१ मूलतः, "मैं अभी इस पर्व्व में नहीं जाता ।" "अभी" शब्द अनेक हस्तलिपियों में आया है ।

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS (USA)
नहीं करता ! तो मुझ पर उसके तोड़ने का क्यों दोष लगाते हो ? मुझे
इसके लिए क्यों मारना चाहते हो ?" २० भीड़ ने कहा, "तुम्हारा तो सिर
फिर गया है ! तुम्हें मारने की कोशिश कौन कर रहा है ?" २१, २२,
२३ यीशु ने उत्तर दिया, "मैंने एक व्यक्ति को चंगा कर सब्त के दिन काम
किया, और तुम चकित थे ![2] तुम भी सब्त के दिन कार्य करते हो—जब
तुम मूसा के दिए गए ख़तने के नियम का पालन करते हो (वास्तव में यह
प्रथा मूसा के नियम से भी पुरानी है), क्योंकि यदि तुम्हारे बच्चों के ख़तना
का ठीक समय सब्त के दिन पड़ता है, तो तुम इस काम को पूरा करते ही
हो, जो उचित है। इसलिए सब्त के दिन एक व्यक्ति को चंगा करने के
लिए मुझ पर दोष क्यों ? २४ इस बात पर ध्यानपूर्वक विचार करो तो
तुम जानोगे कि मेरा वचन सत्य है।"

२५ कुछ लोगों ने जो यरूशलेम के निवासी थे (और जानते थे
कि क्या हो रहा है[3]) आपस में कहा, "क्या यह वही नहीं जिन्हें वे लोग
मारने का प्रयत्न कर रहे हैं ? २६ लेकिन यह यहां खुले रूप से उपदेश
दे रहे हैं, और वे लोग उससे कुछ कहते तक नहीं। क्या यह सम्भव है कि
हमारे अगुवों ने आख़िर समझ लिया कि वास्तव में मसीह यही हैं ? २७
परन्तु यह कैसे हो सकते हैं ? क्योंकि हम जानते हैं कि यह कहां जन्मे।
जब मसीह आएंगे तो वह एकाएक प्रगट होंगे और कोई नहीं जानेगा कि
वह कहां से आए।" २८ इसलिए यीशु ने मन्दिर में उपदेश देते हुए
पुकार कर कहा, "हां, तुम मुझे जानते हो और यह भी कि मेरा जन्म, पालन
पोषण कहां हुआ, परन्तु मैं उसका प्रतिनिधि हूं जिसे तुम नहीं जानते और
वह सत्य है। २९ मैं उसे जानता हूं क्योंकि मैं उसके साथ था, और उसी
ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।" ३० तब यहूदी अगुवों ने उन्हें पकड़ने का
प्रयत्न किया, परन्तु उन पर हाथ न लगा सके, क्योंकि परमेश्वर द्वारा
निर्धारित समय अब तक नहीं आया था। ३१ मंदिर में बहुत से लोगों ने
उन पर विश्वास किया। उन्होंने कहा, "मसीह जब आएंगे तो क्या
इनसे बढ़कर आश्चर्यकर्म दिखाएंगे ?"

---

२ तात्पर्य यही है। इसका संकेत सब्त के दिन की चंगाई से है जिस का उल्लेख अध्याय ५ में है। ३ तात्पर्य यही है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

३२ जब फरीसियों ने सुना कि भीड़ ऐसा कह रही है, तो उन्होंने और महायाजकों ने यीशु को पकड़ने के लिए अधिकारियों को भेजा। ३३ परन्तु यीशु ने उनसे कहा, "अभी नहीं,[४]! मुझे यहां कुछ समय तक और रहना है। तब मैं उसके पास लौट जाऊंगा जिसने मुझे भेजा है। ३४ तुम मुझे खोजोगे किन्तु न पाओगे। और जहां मैं हूं वहां तुम नहीं आ सकोगे!" ३५ यहूदी अगुवे इस कथन से असमंजस में पड़ गए। उन्होंने पूछा, "वह कहां जाने की सोच रहा है? शायद वह इस देश को छोड़ कर अन्य देशों में यहूदियों के मध्य या अन्य जातियों के मध्य धर्म-प्रचारक बनकर जाने का विचार कर रहा है! ३६ उसके इस कथन का क्या अर्थ है, "तुम मुझे ढूढ़ोगे किन्तु नहीं पाओगे और जहां मैं हूं वहां तुम नहीं आ सकोगे?"

३७ उत्सव के अन्तिम दिन यीशु ने पुकार कर भीड़ से कहा, "यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पिए। ३८ क्योंकि धर्मशास्त्र में लिखा है कि जो कोई मुझ पर विश्वास करे उसके हृदय से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी।" ३९ (वह उससे पवित्र आत्मा के विषय, में कह रहे थे, जो उन पर विश्वास लाने वालों को दिया जाने वाला था परन्तु आत्मा अभी तक नहीं दिया गया था क्योंकि यीशु स्वर्ग में अपनी महिमा को नहीं लौटे थे।)

४० जब भीड़ ने उन्हें यह कहते सुना, तो उनमें से कुछ ने कहा, "निश्चय ही यह व्यक्ति भविष्यद्वक्ता है जो मसीह के प्रगट होने से पहले आएंगे।" ४१, ४२ दूसरों ने कहा, "वह मसीह हैं।" औरों ने कहा, "परन्तु वह नहीं हो सकते! क्या मसीह गलील से आएंगे? क्योंकि धर्मशास्त्र में स्पष्ट लिखा है कि मसीह दाऊद के राजघराने से बैतलहम गांव में जन्म लेंगे जहां दाऊद पैदा हुआ था।" ४३ इसलिए उनके कारण लोगों में मतभेद हो गया। ४४ और कुछ लोग उन्हें पकड़ना चाहते थे, किन्तु किसी ने उन पर हाथ नहीं डाला।

४५ मन्दिर के सिपाही जो उन्हें पकड़ने के लिए भेजे गये थे,

---

४ तात्पर्य यही है।

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)
महायाजकों और फरीसियों के पास लौट आए। उन्होंने पूछा, "तुम उसे
क्यों नहीं पकड़ लाए ?" ४६ उन्होंने दबे स्वर में कहा, "वह अत्यन्त
अद्‌भुत बातें कहते हैं ! हमने वैसी बातें कभी नहीं सुनीं।" ४७ फरीसियों
ने ठट्ठा किया, "तो क्या तुम भी भरमाए गए हो ? ४८ क्या हम यहूदी
नेताओं और फरीसियों में से एक भी विश्वास करता है कि वह मसीह हैं ?
४९ हां ये मूर्ख लोग विश्वास करते हैं, परन्तु वे लोग उसके विषय में कुछ
जानते भी हैं ? धिक्कार है उन्हें !"[5] ५० तब नीकुदेमुस ने कहा,
(क्या आपको याद है ? वह यहूदी अगुवा था जो गुप्त रूप में यीशु से
मिलने आया था।) ५१ "क्या बिना न्याय के किसी व्यक्ति को दोषी
ठहराना व्यवस्था के अनुसार है ?" ५२ उन्होंने उत्तर दिया, "क्या तू भी
अभागा गलीली है ! धर्मशास्त्र को खोज और स्वयं देख—गलील से कोई
भविष्यवक्ता नहीं आने का !" ५३[6] तब सभा समाप्त हुई और सब अपने
अपने घर लौट गए।

८ यीशु जैतून के पहाड़ पर लौट गए। २ दूसरे दिन प्रातः वह फिर
मन्दिर में आए। शीघ्र ही लोगों की भीड़ लग गई, और वह बैठ
कर उनसे बातचीत करने लगे। ३ जब वह बातें कर रहे थे तब यहूदी
अगुवे और फरीसी एक स्त्री को लाए जो व्यभिचार में पकड़ी गई थी।
उन्होंने उसे भीड़ के बीच में खड़ा कर दिया। ४ उन्होंने यीशु से कहा,
"गुरु, यह स्त्री व्यभिचार में रंगे हाथ पकड़ी गई है। ५ मूसा की विधि के
अनुसार इसे मार डालना चाहिए ?" अब आप बताइए हम क्या करें ?"
६ यीशु को फंसाने के लिए उन्होंने ऐसा कहा ताकि उनकी बातों द्वारा
उन्हें उन पर दोष लगाने को मिले। किन्तु यीशु ने झुककर अपनी उंगली
से भूमि पर लिखा। ७ वे लोग उत्तर मांगते ही रहे, इसलिए उन्होंने खड़े

५. मूलतः, "ये लोग ... स्रापित हैं।"

६ अनेक प्राचीन प्रतिलिपियों में यूहन्ना ७:५३—८:११ को छोड़ दिया गया है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
होकर उनसे कहा, "ठीक है, उस पर पत्थर फेंकते रहो, जब तक वह मर न जाए। किन्तु केवल वही पहला पत्थर मारे जिसने कभी पाप नहीं किया!" ८ तब वह फिर झुककर भूमि पर लिखने लगे। ९ और यहूदी अगुवे, बड़ों से आरम्भ करके एक-एक कर निकल गए। भीड़ के सामने केवल यीशु और वह स्त्री रह गए। १० तब यीशु ने फिर खड़े होकर उससे कहा, "तुझ पर दोष लगाने वाले कहां गए? क्या उनमें से एक ने भी तुझ को दंड की आज्ञा नहीं दी?" ११ उसने कहा, "महाशय, नहीं।" और यीशु ने कहा, "मैं भी तुझ पर दंड की आज्ञा नहीं देता। जा और फिर कभी पाप मत करना।" १२ कुछ समय बाद यीशु ने अपने उपदेश में लोगों से कहा, "मैं जगत की ज्योति हूं। यदि तुम मेरे पीछे हो लो, तो अंधकार में ठोकर नहीं खाओगे क्योंकि जीवन की ज्योति तुम्हारा मार्ग प्रकाशित करेगी!" १३ फरीसियों ने उत्तर दिया, "तुम डींग मारते और झूठ बोलते हो!" १४ यीशु ने उनसे कहा, "यद्यपि मैं ये दावे अपने विषय में करता हूं, तौभी ये सत्य हैं। क्योंकि मैं जानता हूं कि मैं कहां से आया और कहां जा रहा हूं, किन्तु मेरे बारे में तुम यह नहीं जानते। १५ तुम सत्य से और अनजान रह कर मेरा न्याय करते हो। मैं अभी तुम्हारा न्याय नहीं करता; १६ परन्तु यदि करता भी, तो वह पूरी तरह सच्चा न्याय होता, क्योंकि मेरे पास पिता है जिसने मुझे भेजा। १७ तुम्हारी व्यवस्था के अनुसार यदि दो व्यक्ति किसी बात पर सहमत हों, तो उनकी बात सच समझी जाती है। १८ एक गवाह मैं हूं, दूसरा मेरा पिता है जिसने मुझे भेजा।" १९ उन्होंने प्रश्न किया, "तेरा पिता कहां है?" यीशु ने उत्तर दिया, "तुम यह नहीं जानते कि मैं कौन हूं, इसलिए तुम नहीं जानते मेरा पिता कौन है। यदि तुम मुझे जानते, तो उसे भी जानते।" २० यीशु ने ये बातें मन्दिर के उस भाग में कहीं जो भण्डारघर कहलाता है। परन्तु वे पकड़े नहीं गए क्योंकि उनका समय अब तक पूरा नहीं हुआ था।

२१ कुछ समय बाद उन्होंने फिर उनसे कहा, "मैं जाता हूं और तुम मुझे खोजोगे और अपने पापों में मरोगे। और जहां मैं जाता हूं वहां तुम नहीं आ सकते।" २२ यहूदियों ने एक दूसरे से पूछा, "क्या वह आत्म-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
हत्या करने की सोच रहा है ? उसका क्या अर्थ है, "जहां मैं जाता हूं
वहां तुम नहीं आ सकते ?" २३ तब उन्होंने उनसे कहा, "तुम नीचे के
हो; मैं ऊपर से हूं । तुम इस संसार के हो; मैं नहीं । २४ इसीलिए मैंने
कहा तुम अपने पापों में मरोगे, 'क्योंकि जब तक तुम विश्वास न करो कि
मैं परमेश्वर का पुत्र, मसीह हूं, तुम अपने पापों में मरोगे ।" २५ उन्होंने
पूछा, "हमें बता तू कौन है ?' उन्होंने उत्तर दिया, "मैं वही हूं जिसके
होने का मैंने सदैव दावा किया है । २६ मैं तुम पर बहुत सी बातों का दोष
लगा सकता हूं और दंड दे सकता हूं, परन्तु नहीं लगाऊंगा, क्योंकि मैं
केवल वही कहता हूं जिसकी आज्ञा मेरे भेजने वाले ने दी है; और वह
सच्चा है ।" २७ परन्तु वे तब भी न समझे कि परमेश्वर[1] के विषय में वह
उनसे कह रहे हैं । २८ इसलिए यीशु ने कहा, "जब तुम महिमा[2] के पुत्र
को मार डालोगे, तब तुम समझ लोगे कि मैं वही हूं और यह भी कि मैंने तुमसे
अपनी बातें नहीं कहीं, परन्तु वही कहा है जिसकी शिक्षा मुझे पिता ने
दी है । २९ और जिसने मुझे भेजा वह मेरे संग है—उसने मुझे नहीं छोड़ा
है—क्योंकि मैं सदा वही कार्य करता हूं जिनसे वह प्रसन्न होता है ।"

३०, ३१ तब अनेक यहूदी अगुवों ने उनकी ये बातें सुन कर उन पर
विश्वास किया कि यही मसीह हैं । यीशु ने उनसे कहा, "यदि तुम मेरी
शिक्षा के अनुसार चलोगे तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे, ३२ और तुम
सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा ।" ३३ "परन्तु हम तो
इब्राहीम के वंश के हैं," उन्होंने कहा, "और हम इस संसार में कभी किसी
व्यक्ति के दास नहीं हुए ! 'तुम्हें स्वतंत्र करेगा', इससे आपका क्या मत-
लब है ?"

३४ यीशु ने उत्तर दिया, "तुम सब पाप के दास हो । ३५ और
दास अधिकार नहीं रखते, परन्तु पुत्र पूरा अधिकार रखता है । ३६
इसलिए यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करे तो तुम वास्तव में स्वतंत्र होगे—३७
चाहे तुम इब्राहीम की सन्तान ही क्यों न हो ! और तौभी तुम में से कई
मुझे मार डालने के प्रयत्न में हैं क्योंकि मेरे संदेश को तुम अपने हृदय में

---

१ मूलतः, "पिता" २ मूलतः, "जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊंचे पर चढ़ाओगे।"

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
ग्रहण नहीं करते । ३८ फिर भी मैं तुम से वही बातें कहता हूं जो मैंने उस समय सीखीं जब मैं अपने पिता के साथ था । परन्तु तुम अपने पिता अर्थात शैतान की सलाह पर चलते हो ।"

३९ उन्होंने कहा, "हमारा पिता इब्राहीम है।" यीशु ने उत्तर दिया, "नहीं ! क्योंकि यदि वह होता तो तुम उसके अच्छे आदर्श पर चलते । ४० परन्तु इसके बदले तुम मुझे मार डालने का प्रयत्न कर रहे हो केवल इसलिए क्योंकि मैंने तुम से सच कहा जो परमेश्वर से सुना । इब्राहीम कभी ऐसा नहीं करता ! ४१ नहीं, तुम जब इस प्रकार का कार्य करते हो तो अपने वास्तविक पिता शैतान की आज्ञा मानते हो ।" वे बोले, "हम जारज सन्तान नहीं हैं, हमारा पिता एक है, अर्थात् परमेश्वर ।"

४२ यीशु ने उन्हें बताया, "यदि इब्राहीम तुम्हारा पिता होता तो तुम मुझ से प्रेम रखते, क्योंकि पिता ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है । मैं यहां स्वयं अपनी इच्छा से नहीं आया हूं, परन्तु उसने मुझे भेजा है । ४३ तुम समझते क्यों नहीं कि मैं क्या कह रहा हूं ? कारण यह है कि तुम्हें ऐसा करने से रोका गया है ! ४४ क्योंकि तुम अपने पिता शैतान की सन्तान हो, और उसी के समान बुरे कार्य करना तुम्हें पसन्द है । वह आरम्भ से ही हत्यारा और सत्य से घृणा करने वाला है —उसमें अंश मात्र भी सच्चाई नहीं है । जब वह झूठ बोलता है तो अपना स्वाभाविक गुण दर्शाता है; क्योंकि वह झूठ का पिता है । ४५ इसलिए जब मैं तुमसे सत्य कहता हूं तो स्वाभाविक है कि तुम विश्वास नहीं करते ! ४६ तुम में से कौन मुझ पर एक भी पाप का दोष लगा सकता है ? कोई नहीं ![3] इसलिए जब मैं तुम्हें सच बात बताता हूं तो तुम मेरा विश्वास क्यों नहीं करते ? ४७ जिसका पिता परमेश्वर है वह आनन्दपूर्वक परमेश्वर के वचन सुनता है । तुम नहीं सुनते इससे सिद्ध होता है कि तुम उसकी सन्तान नहीं हो ।"

४८ यहूदी अगुवे झल्लाए, "अरे सामरी ! परदेशी ! शैतान ! क्या हम सदा से यह नहीं कहते आए कि तुझ में दुष्टात्मा समाई है ।?" ४९ यीशु ने कहा, "नहीं, मुझ में कोई दुष्टात्मा नहीं । क्योंकि मैं अपने पिता का आदर करता हूं—और तुम मेरा अनादर करते हो । ५० यद्यपि

---

३ तात्पर्य यही है ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
मैं अपनी बड़ाई नहीं चाहता, परन्तु परमेश्वर की यही इच्छा है और यह
(मेरे विरोधियों[४] का) न्याय करता है। ५१ मैं तुम से पूर्ण सच्चाई
के साथ कहता हूं–जो मुझ पर विश्वास करे वह कभी न मरेगा!" ५२
यहूदियों के अगुवों ने कहा, "अब हम समझ गए हैं कि तुझ में दुष्टात्मा
समाई है। इब्राहीम और दूसरे महान नबी सब मर गए, और तौभी तू
कहता है जो तेरी आज्ञा मानेगा उसे तू मृत्यु से बचा सकता है। ५३ सो
क्या तू हमारे पिता इब्राहीम से भी बड़ा है, जो मर गया? और क्या तू
उन नबियों से भी बड़ा है जो मर मिटे? तू अपने आपको समझता क्या
है?" ५४ तब यीशु ने उनसे यह कहा: "यदि केवल मैं स्वयं अपनी
बढ़ाई करता हूं तो व्यर्थ है। परन्तु मेरा पिता—जिसे तुम अपना परमे-
श्वर कहते हो—वही मेरी महिमा करता है। ५५ परन्तु तुम उसे जानते
तक नहीं। मैं जानता हूं। यदि कहूं कि नहीं जानता तो तुम्हारे समान
झूठा ठहरूंगा! परन्तु यह सत्य है—मैं उसे जानता हूं और उसकी सब
आज्ञाओं को मानता हूं। ५६ तुम्हारा पिता इब्राहीम भी मेरा दिन देखने
की आशा में मगन था। उसे मालूम था कि मैं आने वाला हूं और वह
प्रसन्न था।" ५७ यहूदी अगुवे बोले: "तू पचास वर्ष का भी नहीं है और
तूने इब्राहीम को देखा है?" ५८ यीशु: "यह बिल्कुल सच है कि इब्रा-
हीम के पैदा होने से पहले मैं था!" इस बात पर यहूदी अगुवों ने उन्हें
मार डालने को पत्थर उठाए। किन्तु यीशु छिप गए और मन्दिर छोड़
कर चले गए।

९ रास्ते में जाते हुए यीशु ने एक व्यक्ति को देखा जो जन्म से अंधा था
२ उनके शिष्यों ने उनसे पूछा, "गुरुजी, यह व्यक्ति क्यों अंधा
जन्मा? क्या अपने पापों के कारण या अपने माता पिता के पापों के कारण?"
३ यीशु ने उत्तर दिया, "किसी के पापों के कारण नहीं परन्तु परमेश्वर
की सामर्थ प्रगट करने के लिए। ४ परमेश्वर जिसने मुझे भेजा है, हमें

४ तात्पर्य यही है। मूलतः, "हां एक तो है जो चाहता है और न्याय करता है।"

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उसका कार्य जल्द से जल्द पूरा करना है क्योंकि समय बहुत कम है। शीघ्र ही रात हो जाएगी और सब काम बन्द हो जाएंगे। ५ किन्तु जब तक मैं यहां इस संसार में हूं, मैं उसे अपनी ज्योति प्रदान करता रहूंगा।" ६ तब उन्होंने जमीन पर थूका और थूक से मिट्टी सानी और मिट्टी अंधे की आंखों पर लगा दी। ७ तब उन्होंने कहा, "जा और शीलोह के कुंड में धो ले ("शीलोह" शब्द का अर्थ भेजा हुआ है)। वह उस स्थान पर गया और आंखें धोकर देखता हुआ लौट आया! ८ उसके पड़ोसियों और दूसरों ने, जो उसे अंधे भिखारी के रूप में जानते थे आपस में पूछा, "क्या यह व्यक्ति—वही भिखारी है?" ९ कुछ ने कहा हां, और कुछ लोगों ने कहा नहीं। उन्होंने सोचा, "यह वह व्यक्ति नहीं हो सकता, परन्तु वास्तव में उसी के समान दिखता है!" उस भिखारी ने कहा, "मैं वही व्यक्ति हूं!" १० तब उन्होंने प्रश्न किया, "तू कैसे देखने लगा? यह कैसे हुआ?" ११ उसने उन्हें बताया, "यीशु नामक व्यक्ति ने मिट्टी सानी और उसे मेरी आंखों पर लगाकर मुझे शीलोह के कुंड में धोने को कहा। मैंने वैसा ही किया और अब देखता हूं!" १२ उन्होंने पूछा, "वह अभी कहां है?" उसने उत्तर दिया "मैं नहीं जानता।"

१३ तब वें उस व्यक्ति को फरीसियों के पास ले गए। १४ (वह सब्त[१] का दिन था जब यह घटना हुई।) १५ तब फरीसियों ने उससे सब हाल पूछा। तब उसने बताया कि यीशु ने कैसे मिट्टी सानी और जब उसे धोया गया, तो वह देखने लगा! १६ उनमें से कुछ ने कहा, "तब तो यह व्यक्ति यीशु, परमेश्वर की ओर से नहीं है, क्योंकि वह सब्त के दिन कार्य करता है! दूसरों ने कहा, "किन्तु एक साधारण पापी व्यक्ति इतने आश्चर्यकर्म कैसे कर सकता है?" इसलिए उनमें गहरा मतभेद उत्पन्न हुआ। १७ तब फरीसियों ने उस व्यक्ति से जो पहले अंधा था पूछा, "जिस व्यक्ति ने तेरी आंखें खोली उसके विषय में तू क्या कहता है?" उसने उत्तर दिया, "मैं सोचता हूं कि वह परमेश्वर का भेजा हुआ नबी है।"

---

१ अर्थात् शनिवार का दिन था, जो यहूदियों का साप्ताहिक छुट्टी का दिन था जिसमें सब काम करना मना था।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१८ यहूदी अगुवों को तब तक विश्वास नहीं हुआ कि यह अंधा था,
जब तक उन्होंने उसके माता-पिता को नहीं बुलाया । १९ और पूछा,
"क्या यह तुम्हारा पुत्र है ? क्या यह अन्धा जन्मा था ? यदि हां, तो अब
कैसे देख सकता है ?" २० उसके माता-पिता ने उत्तर दिया, "हम जानते
हैं कि यह हमारा पुत्र है और वह अंधा जन्मा था, २१ परन्तु हम नहीं जानते
कि क्या हुआ और वह कैसे देखने लगा और किसने उसकी आंखें खोलीं ।
वह समझदार है, उसी से पूछो !" २२,२३ उन्होंने यहूदी अगुवों के भय
से ऐसा कहा, जिन्होंने घोषणा की थी कि जो भी यीशु को मसीह कहे उसे
समाज से बाहर निकाल दिया जाएगा ।

२४ इसलिए उन्होंने दूसरी बार उस व्यक्ति को बुलाया जो पहले
अंधा था और उसने कहा, "परमेश्वर की महिमा कर यीशु की नहीं
क्योंकि हम जानते हैं कि यीशु एक बुरा व्यक्ति है ।" २५ उस व्यक्ति
ने कहा, "मुझे नहीं मालूम—वह बुरा है या भला; परन्तु इतना जानता
हूं : कि **मैं अंधा था, और अब देखता हूं** ! २६ उन्होंने पूछा, "परन्तु
उसने किया क्या ? उसने तुझे कैसे चंगा किया ?" २७ उस व्यक्ति ने
कहा, "देखो ! मैं एक बार बता चुका हूं, क्या तुमने नहीं सुना ? फिर
क्यों सुनना चाहते हो ? क्या तुम भी उसके चेले होना चाहते हो ?"
२८ तब उन्होंने उसे झिड़का, "तू ही उसका चेला है, हम तो मूसा के चेले
हैं । २९ हमें मालूम है कि परमेश्वर ने मूसा से बातें कीं, परन्तु इस व्यक्ति
के संबंध में हमें कुछ भी नहीं मालूम है ।" ३० उस व्यक्ति ने कहा, "अरे
यह तो बड़ी अद्भुत बात है ? वह अंधे को चंगा कर सकता है और तुम
उसके विषय में कुछ नहीं जानते ! ३१ परमेश्वर बुरे व्यक्तियों की नहीं
सुनता परन्तु जो उसकी भक्ति करते हैं और उसकी इच्छा पूरी करते हैं
उनकी सुनता है । ३२ सृष्टि के आरम्भ से अब तक कभी सुनने में नहीं
आया कि किसी ने जन्म से अंधे की आंखें खोली हों । ३३ यदि वह व्यक्ति
परमेश्वर की ओर से न होता, तो कभी यह काम नहीं कर सकता था ।"
३४ वे क्रोध से चिल्लाए, "अरे दोगले[२] तू हमें सिखाने चला !" और
उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया ।

---

२ मूलत :, "तू बिल्कुल पापों में जन्मा है ।"

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

३५ जब यीशु ने यह सुना तो उससे भेंट करके कहा, "क्या तुम्हें मसीह[१] पर विश्वास है ?" ३६ व्यक्ति ने उत्तर दिया, "महाशय, वह कौन है ? क्योंकि मैं उस पर विश्वास करना चाहता हूं ।" ३७ यीशु ने कहा, "तुमने उसे देखा है, और वह तुम से बातें कर रहा है !" ३८ उस व्यक्ति ने कहा, "हां प्रभु, मैं विश्वास करता हूं !" और उसने यीशु को दंडवत किया । ३९ यीशु ने उसे बताया, "मैं संसार में इसलिए आया कि जो आत्मिक रूप से अंधे हैं उन्हें दृष्टि दूं और जो सोचते हैं कि वे देखते हैं उन्हें दर्शाऊं कि वे अंधे हैं ।" ४० वहां खड़े फरीसियों ने पूछा, "क्या तू यह कह रहा है कि हम अंधे हैं ?" ४१ यीशु ने उत्तर दिया, "यदि तुम अंधे होते तो दोषी न ठहरते, परन्तु तुम्हारा दोष बना रहता है क्योंकि तुम दावा करते हो कि तुम्हें भले-बुरे की समझ है ।"

१० "जो कोई द्वार से भेड़शाले में प्रवेश नहीं करता, और दीवार फांद कर कूदता है वह अवश्य डाकू है ! २ क्योंकि चरवाहा द्वार से प्रवेश करता है । ३ उसके लिए द्वारपाल द्वार खोल देता है, और भेड़ें उसका शब्द सुनती हैं और उसके पास आती हैं; और वह अपनी भेड़ों को नाम ले लेकर पुकारता है और उनको बाहर ले जाता है । ४ वह उनके आगे-आगे जाता है, और वे उसके पीछे हो लेती हैं क्योंकि उसका शब्द पहचानती हैं । ५ वे अजनबी के पीछे नहीं जाएंगी परंन्तु उससे दूर भागेंगी, क्योंकि वे उसका शब्द नहीं पहचानतीं । ६ जितनों ने यीशु का यह उदाहरण सुना वे नहीं समझे कि उनका क्या अर्थ है ।

७ इसलिए उन्होंने समझाया, "भेड़ों के लिए द्वार मैं हूं । ८ जितने मुझसे पहले आए वे चोर और डाकू थे । परन्तु सच्ची भेड़ों ने उनकी न सुनी । ९ हां, द्वार मैं हूं । जो द्वार से भीतर आएंगे वे उद्धार पाएंगे । वे भीतर बाहर आया जाया करेंगे और चारा पाएंगे । १० डाकू का उद्देश्य चुराना, प्राण लेना और नष्ट करना होता है । मेरा उद्देश्य बहुतायत से

---

३ मूलतः, "मनुष्य के पुत्र"

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अनन्त जीवन देना है । ११ अच्छा चरवाहा मैं हूं । अच्छा चरवाहा
अपनी भेड़ों के लिए अपनी जान देता है । १२ भेड़िये को आते देख कर
मज़दूर भागेगा, और भेड़ों को छोड़ देगा, क्योंकि वे उसकी नहीं हैं और
वह उनका चरवाहा नहीं है । इसलिए भेड़िया उन पर झपटता और भेड़ों
को तितर-बितर कर देता है । १३ मज़दूर भाग जाता है क्योंकि उसे
वास्तव में अपनी मज़दूरी की चिन्ता रहती है भेड़ों की नहीं । १४ अच्छा
चरवाहा मैं हूं और अपनीं भेड़ों को जानता हूं, और वे मुझे जानती हैं।
१५ जैसे मेरा पिता मुझे जानता है और मैं पिता को जानता हूं और मैं
भेड़ों के लिए अपनी जान देता हूं । १६ मेरी और भी भेड़ें हैं, जो दूसरे
भेड़शाले में हैं । अवश्य है कि मैं उनको भी लाऊं, और वे मेरा शब्द सुनेंगी
और एक ही झुण्ड और एक ही चरवाहा होगा । १७ पिता मुझ से प्रेम
रखता है क्योंकि मैं अपनी जान देता हूं ताकि उसे फिर से वापिस ले लूं ।
१८ मेरी सहमति के बिना कोई मुझे मार नहीं सकता—मैं स्वेच्छा से
अपनी जान देता हूं । क्योंकि मुझे अपनी इच्छानुसार जान देने का तथा
उसे फिर से लेने का भी अधिकार और सामर्थ्य प्राप्त है । क्योंकि पिता
ने मुझे यह अधिकार दिया है ।"

१९ उन्होंने जब ये बातें कहीं तो उनके संबंध में यहूदी अगुवों में
फिर फूट पड़ गई । २० कुछ ने कहा, "उसमें दुष्टात्मा है, या वह पागल है ।
ऐसे व्यक्ति की क्यों सुनें ?" २१ दूसरों ने कहा, "हमें तो ऐसा नहीं लगता
कि इस व्यक्ति में दुष्टात्मा समाई है । क्या दुष्टात्मा किसी अंधे की आंखें
खोल सकता है ?"

२२, २३ यह ठंड की ऋतु[1] थी । यीशु स्थापन के उत्सव के समय
यरूशलेम में थे । वह मंदिर के उस भाग में टहल रहे थे जो सुलेमान का
ओसारा कहलाता है । २४ यहूदी अगुवों ने उन्हें घेर लिया और पूछा
"तू कब तक हमें दुविधा में रखेगा ? यदि तू मसीह है तो हम से स्पष्ट
कह दे ।" २५ यीशु ने उत्तर दिया, "मैंने तुमसे[2] पहले ही कह दिया, और
तुमने मेरा विश्वास नहीं किया । जो आश्चर्यकर्म मैं पिता के नाम से

१ मन्दिर में सफाई के उत्सव की सामान्य तिथि २५ दिसम्बर थी ।
२ अध्याय ५:१९, ८:३८, ५६, ५८ इत्यादि

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

करता हूं वे ही इसके प्रमाण हैं। २६ परन्तु तुम मेरा विश्वास नहीं करते क्योंकि तुम मेरी भेड़ों में से नहीं हो। २७ मेरी भेड़ें मेरा स्वर पहचानती हैं और मैं उन्हें जानता हूं और वे मेरे पीछे हो लेती हैं। २८ मैं उनको अनन्त जीवन देता हूं, और वे कभी नाश न होंगी। उन्हें मुझसे कोई छीन न लेगा। २९ क्योंकि मेरे पिता ने उन्हें मुझे दिया है और वह सब से अधिक सामर्थी है, इसलिए मेरे पास से कोई उनका अपहरण नहीं कर सकता। ३० मैं और पिता एक हैं।"

३१ तब यहूदी अगुवों ने उन्हें मार डालने को फिर पत्थर उठाये। ३२ यीशु ने कहा, "लोगों की सहायता के लिए मैंने परमेश्वर की अगुवाई से आश्चर्यकर्म किए हैं। तुम उनमें से किस काम के लिए मुझे मारना चाहते हो?" ३३ उनका उत्तर था, "किसी भले काम के लिए नहीं परन्तु परमेश्वर की निन्दा के लिए। तू एक साधारण व्यक्ति होकर स्वयं को परमेश्वर कहता है।" ३४, ३५, ३६ उन्होंने उत्तर दिया, "तुम्हारी ही व्यवस्था में लिखा है कि मनुष्य ईश्वर है। इसलिए यदि धर्मशास्त्र (जो असत्य नहीं हो सकता) उन्हें ईश्वर कहता है जिनके पास परमेश्वर का संदेश पहुंचा, तो क्या तुम इसे ईश्वर-निन्दा कहते हो जब परमेश्वर का भेजा हुआ और पवित्र ठहराया हुआ यह कहता है, "मैं परमेश्वर का पुत्र हूं"? ३७ यदि मैं परमेश्वर की आज्ञा से आश्चर्यकर्म न करूं तो मुझ पर विश्वास मत करो। ३८ किन्तु यदि करूं तो मुझ पर विश्वास करो चाहे न करो परन्तु उन कामों पर तो करो। तब तुम्हें निश्चय होगा कि पिता मुझ में है, और मैं पिता में।" ३९ उन्होंने फिर उन्हें पकड़ने का प्रयत्न किया। परन्तु वह उनको छोड़कर चले गए।

४० और वह यरदन पार उस स्थान में ठहरने को गए जहां यूहन्ना पहले बपतिस्मा देते थे। ४१ और बहुत लोग उनके पीछे हो लिए। वे आपस में कहते थे, "यूहन्ना ने आश्चर्यकर्म नहीं किया, किन्तु उन्होंने इस व्यक्ति के विषय में जो भविष्यद्वाणी की थी वह सच हुई है।" ४२ और अनेक लोग इस निर्णय पर पहुंचे कि यही मसीह हैं।[3]

---

३ मूलतः, "वहाँ बहुतेरों ने उन पर विश्वास किया।"

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

११ क्या आपको मरियम का नाम याद है जिसने यीशु के पैरों पर
बहुमूल्य इत्र डाला था। और अपने वालों से उन्हें पोंछा था ?[१]
हां, उसका भाई लाज़र बीमार था। वह अपनी बहिनों मरियम और
मरथा के साथ वैतनिय्याह में रहता था। ३ इसलिए दोनों बहिनों ने यीशु
के पास संदेश भेजा, "महाशय, आपका प्रिय मित्र बहुत बीमार है।"
४ परन्तु जब यीशु ने यह सुना, तो कहा, "उसकी बीमारी का उद्देश्य
मृत्य नहीं है, परन्तु परमेश्वर की महिमा करना है। इस परिस्थिति के
द्वारा मुझ परमेश्वर के पुत्र की महिमा होगी।"
५ यद्यपि यीशु को मरथा, मरियम और लाज़र से बहुत प्रेम था,
६ तौभी वह जहां थे, वहां दो दिन और ठहर गए। ७ दो दिन बीतने
के पश्चात उन्होंने अपने चेलों से कहा, "चलो, हम यहूदिया को जाएं।"
८ परन्तु उनके चेलों ने विरोध किया। उन्होंने कहा, "गुरुजी, कुछ ही
दिन पहले यहूदिया में यहूदी अगुवे आपको मार डालने का प्रयत्न कर
रहे थे। क्या आप वहां फिर जाएंगे ?" ९ यीशु ने उत्तर दिया "प्रतिदिन
वारह घंटे का प्रकाश रहता है, इन घंटों में व्यक्ति बिना ठोकर खाए चल
सकता है। १० केवल रात में ही अंधेरे के कारण ठोकर लगने का डर
रहता है।" ११ तब उन्होंने कहा, "हमारा मित्र लाज़र सो गया है, परन्तु
अब मैं जाकर उसे जगाऊंगा!" १२, १३ चेलों ने यीशु के कथन का यह
अर्थ समझा कि लाज़र को रात्रि में मीठी नींद आई, इसलिए उन्होंने कहा,
"तब तो लाज़र अच्छा हो रहा है।" परन्तु यीशु का तात्पर्य था कि लाज़र
मर गया है। १४ तब उन्होंने उनसे स्पष्ट कहा, "लाज़र मर गया है।
१५ और तुम्हारे कारण, मुझे आनन्द है कि मैं वहां नहीं था क्योंकि इससे
तुमको मुझ पर विश्वास करने के लिए एक और अवसर मिलेगा। चलो,
उसके पास चलें।" १६ थोमा ने (जिसका उपनाम "दिदुमुस" था)
दूसरे चेलों से कहा, "हम भी चलें—और उसके साथ मरें।"
१७ जब वे वैतनिय्याह पहुंचे, उन्हें बताया गया कि लाज़र को कब्र
में रखे चार दिन हो गए हैं। १८ वैतनिय्याह यरूशलेम से करीब दो मील
की दूरी पर था, १९ और अनेक यहूदी नेता समवेदना प्रकट करने और

---

१ यूहन्ना १२ : ३ पढ़िये।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
मरियम और मरथा को भाई की मृत्यु के कारण सान्त्वना देने आए थे।
२० जब मरथा ने सुना कि यीशु आ रहे हैं, तो वह उनसे भेंट करने गई।
परन्तु मरियम घर पर ठहरी रही। २१ मरथा ने यीशु से कहा,
"श्रीमान, यदि आप यहां होते तो मेरा भाई नहीं मरता। २२ और अभी
भी कोई देर नहीं हुई, क्योंकि मुझे मालूम है कि यदि आप परमेश्वर से
मांगेंगे तो वह मेरे भाई को फिर जिलाएगा।" २३ यीशु ने उससे कहा
"तेरा भाई फिर जी उठेगा!" २४ मरथा ने कहा, "जी हां, पुनरुत्थान
के दिन, जब सब जी उठेंगे।" २५ **यीशु ने उसे बताया, "मैं ही हूं जो**
मरे हुओं को जिलाता और जीवन देता हूं। जो मुझ पर विश्वास करता है,
वह चाहे सब के समान मर भी जाए, तौभी फिर जीएगा। २६ मुझ पर
विश्वास करने के कारण उसे अनन्त जीवन मिलेगा और वह कभी नाश
न होगा। मरथा, क्या तू इस पर विश्वास करती है?" २७ "जी हां,
प्रभु," मरथा ने उनसे कहा, "मैं विश्वास करती हूं कि आप परमेश्वर के
पुत्र मसीह हैं जिनकी हम बहुत समय से प्रतीक्षा करते आए हैं।"

२८ तब वह उन्हें छोड़ कर मरियम के पास लौटी और उसे विलाप
करने वालों से अलग ले जाकर बताया, "गुरुजी यहां आए हैं और तुझ से
मिलना चाहते हैं।" २९ मरियम तत्काल उनसे भेंट करने गई। ३०
यीशु गांव के बाहर उस स्थान पर ठहरे थे, जहां मरथा ने उनसे भेंट की
थी। ३१ जब यहूदी अगुवों ने, जो उसके घर सान्त्वना देने आए थे, मरियम
को शीघ्रता से जाते देखा, तो अनुमान लगाया कि वह लाज़र की कब्र पर
रोने जा रही है, इसलिए वे उसके पीछे हो लिए। ३२ जब मरियम वहां
पहुंची जहां यीशु थे, तो उनके पैरों पर गिरकर कहा, "महाशय यदि आप
यहां होते तो मेरा भाई अब तक जीवित होता।" ३३ जब यीशु ने उसे
और यहूदी अगुवों को रोते देखा तो अत्यन्त निराश और दुखी हुए।
३४ उन्होंने उनसे पूछा, "उसे कहां गाड़ा गया है?" उन्होंने कहा, "आकर
देख लीजिए।" ३५ यीशु की आंखों में आंसू आ गए। ३६ यहूदी अगुवों
ने कहा, "वे घनिष्ट मित्र थे, देखो वह उससे कितना प्रेम रखता था।"
३७, ३८ परन्तु कुछ ने कहा, "यह व्यक्ति अंधे को चंगा कर सका—फिर
क्यों लाज़र को मरने से नहीं रोक सका?"

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)
और यीशु फिर मन में बहुत उदास हुए। तब वे कब्र पर आए। वह
एक गुफ़ा थी जिसके द्वार पर एक बड़ा पत्थर रखा था। ३९ यीशु ने
उनसे कहा, "पत्थर को लुढ़का दो।" परन्तु मृतक की बहिन मरथा ने
कहा, "अब तक तो बड़ी दुर्गन्ध आती होगी, क्योंकि उसे मरे चार दिन
हो गए।" ४० यीशु ने उससे पूछा, 'परन्तु क्या मैंने तुझ से नहीं कहा
कि तू यदि विश्वास करे तो परमेश्वर की ओर से अद्भुत चमत्कार
देखेगी ?" ४१ इसलिए उन्होंने पत्थर को लुढ़काया। तब यीशु ने स्वर्ग
की ओर देखा और कहा, "पिता, तेरा धन्यवाद हो कि तू मेरी सुनता
है। ४२ (तू सदैव मेरी सुनता रहा है परन्तु ऐसा मैंने इसलिए कहा कि
यहां खड़े सब लोग विश्वास करें कि तू ने मुझे भेजा है।") ४३ तब उन्होंने
ज़ोर से पुकारा, "हे लाज़र, निकल आ।" ४४ और लाज़र निकल आया।
वह कफ़न से लिपटा हुआ था और उसके सिर पर एक अंगोछा बंधा हुआ
था। यीशु ने उनसे कहा, "कफ़न को खोलो और उसे जाने दो।"

४५ बहुत से यहूदी अगुवों ने जो मरियम के साथ थे यह सब कुछ
देखा, तो उन पर विश्वास किया! ४६ परन्तु कुछ ने फरीसियों के पास
लौटकर उन्हें सब हाल बताया। ४७ तब महायाजकों और फरीसियों
ने स्थिति पर विचार करने के लिए सभा बुलाई। उन्होंने आपस में पूछा,
"हमें क्या करना चाहिए ? क्योंकि वह व्यक्ति वास्तव में अद्भुत कार्य
करता है। ४८ यदि उसे ऐंसे ही छोड़ दें, तो पूरा देश उसके पीछे हो
लेगा—और तब रोमी सैना आकर हमें नष्ट कर डालेगी और हमसे
यहूदी शासन भी छीन लेगी।" ४९ लेकिन उनमें से कैफा नामक एक
व्यक्ति ने जो उस वर्ष महायाजक था, कहा, "हे मूर्खो और निर्बुद्धियो—
५० उस अकेले व्यक्ति को सब लोगों के लिए मरने दो—पूरी जाति क्यों
नाश हो ?" ५१ यह भविष्यद्वाणी कि यीशु को सारी जाति के लिए
मरना होगा। कैफा ने महायाजक के पद पर रहते हुए की—उसने स्वयं
सोचकर यह नहीं कहा, किन्तु उसे कहने के लिए उभारा गया। ५२ यह
भविष्यद्वाणी थी कि यीशु की मृत्यु केवल इस्राएल के लिए ही नहीं होगी
परन्तु परमेश्वर की सब सन्तान के लिए जो संसार में तितर बितर हो
गई हैं। ५३ इसलिए उस समय से यहूदी अगुवे यीशु की मृत्यु का षड्यन्त्र

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
रखने लगे ।

५४ अब यीशु ने अपनी सेवा समाप्त की और यरूशलेम छोड़ दिया
फिर वह जंगल के निकट इफ्राईम नामक गांव में गए और वहीं चेलों के
साथ ठहरे ।

५५ यहूदियों के पवित्र फसह का पर्व निकट था । गांवों के अनेक
लोग यरूशलेम में कई दिनों पहले पहुंच चुके थे ताकि फसह के आरम्भ
होने से पहले शुद्धि की रीति पूर्ण कर सकें । ५६ वे यीशु को देखना
चाहते थे और मन्दिर में चुपके चुपके एक दूसरे से बातें करते हुए आपस में
पूछते थे, "तुम क्या सोचते हो ? क्या यीशु फसह मनाने आएंगे ?"
५७ इस बीच महायाजकों और फरीसियों ने खुले रूप में घोषणा की थी
जो कोई यीशु को देखे वह उन्हें तत्काल सूचना दे ताकि वे पकड़ सकें ।

१२

फसह के उत्सव के आरम्भ होने से छः दिन पहले यीशु बैतनिय्याह
में आए, जहां लाज़र था—जिसे उन्होंने जिलाया था । २ यीशु के
सम्मान में भोज तैयार किया गया था । मरथा पहुनाई कर रही थी और
लाज़र उनके साथ भोजन करने बैठा था । ३ तब मरियम ने जटामासी
के बहुमूल्य इत्र का पात्र लिया और उस इत्र को यीशु के पैरों पर मला और
अपने बालों से पोंछा । और इत्र की सुगन्ध से घर सुगन्धित हो गया ।
४ परन्तु उनके चेलों में से—यहूदा इस्करियोती ने—जो उनको पकड़वाने
पर था—कहा, ५ "यह इत्र तो बहुत दाम का था । इसे बेचकर ग़रीबों
को रुपया बांटा जा सकता था ।" ६ वास्तव में उसे ग़रीबों की कुछ चिन्ता
नहीं थी, परन्तु चेलों का पैसा उसके पास जमा रहता था और वह बहुधा
अपने काम के लिए उसमें से निकाल लिया करता था । ७ यीशु ने उत्तर
दिया, "मरियम से कुछ न कहो । उसने मेरे गाड़े जाने की तैयारी में यह
सब किया है । ८ तुम ग़रीबों की सहायता सदैव कर सकते हो, परन्तु मैं
अधिक समय तक तुम्हारे पास नहीं रह सकूंगा ।"

९ जब यरूशलेम की साधारण जनता ने उनके आने का समाचार

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
सुना, तो लोगों की भीड़, उनको तथा लाज़र को भी—जिसे उन्होंने
मृतकों में से जिलाया था—देखने के लिए इकट्ठी हो गई। १० तब
महायाजकों ने लाज़र को भी मार डालने का निर्णय किया, ११ क्योंकि
उसी के कारण अनेक यहूदी अगुवों ने उनसे अलग होकर यीशु पर विश्वास
किया था कि यही उनका मसीह है। १२ अगले दिन यह ख़बर फैल गई
कि यीशु यरूशलेम की ओर आ रहे हैं, और फसह का उत्सव मनाने के लिए
आई हुई बड़ी भीड़; १३ ख़जूर की डालियां लेकर और यह चिल्लाते हुए
मार्ग पर उनसे भेंट करने निकली, "उद्धारकर्ता! इस्राएल के राजा को
परमेश्वर आशिष दे! परमेश्वर के राजदूत की जय!" १४ यीशु ने
गधे के बच्चे पर सवारी करके इस भविष्यद्वाणी को पूरा किया।

१५ "यरूशलेम के लोगो, अपने राजा से भयभीत न हो, क्योंकि वह
दीनता-पूर्वक, गधे के बच्चे पर बैठा हुआ तुम्हारे पास आएगा!" १६
इस समय यीशु के चेलों ने यह नहीं समझा कि भविष्यवाणी पूरी हो रही है।
किन्तु जब यीशु स्वर्ग को अपनी महिमा में लौट गए, तब उन्होंने ध्यान
दिया कि धर्मशास्त्र की कितनी भविष्यद्वाणियां उनकी आंखों के सामने
पूरी हुई थीं। १७ भीड़ के कुछ लोगों ने यीशु को लाज़र को जिलाते
देखा था, वे दूसरों से इस घटना का वर्णन कर रहे थे। १८ वास्तव में
यही कारण था कि बहुत से लोग यीशु से मिलने आए थे—इसलिए नहीं
कि उन्होंने इस अद्भुत चमत्कार के विषय में सुना था। १९ तब फरीसियों
ने एक दूसरे से कहा, "हम तो हार गए। देखो—सारा संसार उसके पीछे
हो लिया है।"

२० कुछ यूनानियों ने जो यरूशलेम में फसह का पर्व मनाने आए
थे, २१ फिलिप्पुस[1] से भेंट की, जो बैतसैदा का निवासी था, और कहा,
"महाशय, हम यीशु से मिलना चाहते हैं।" २२ फिलिप्पुस ने अन्द्रियास
को बताया और वे दोनों यीशु से पूछने गए। २३, २४ यीशु ने उत्तर दिया,
"समय आ गया है कि मैं अपनी महिमा में स्वर्ग को लौट जाऊं जैसे गेहूं का
दाना ज़मीन में गिर कर जब तक मर नहीं जाता, तब तक अकेला रहता है
परन्तु जब मर जाता है तो बहुत फसल देता है। मैं भी ऐसे ही मरूंगा।

१ फिलिप्पुस नाम यूनानी था, यद्यपि वह यहूदी था।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
फिर दाने की फ़सल के समान मेरे विश्वासियों की भी भारी फ़सल होगी ।
२५ यदि तुम इस संसार में अपने जीवन को प्रिय जानोगे—तो उसे खो
दोगे । यदि तुम यहां उसे तुच्छ जानोगे—तो बदले में तुम्हें अनन्त जीवन
मिलेगा ! २६ यदि ये यूनानी[2] मेरे चेले बनना चाहते हैं तो उनसे कहो
कि आएं और मेरे पीछे चलें क्योंकि जहां मैं हूं वहां मेरे सेवकों का होना
अवश्य है । और यदि वे मेरे पीछे चलेंगे, तो पिता उनका आदर
करेगा ।

२७ अब मेरा हृदय अत्यन्त व्याकुल है । क्या मैं प्रार्थना करूं "पिता,
मुझे भविष्य की बातों से बचा ? परन्तु मैं इसी कारण आया हूं ! २८
हे पिता, अपने नाम की महिमा कर ।" तब स्वर्ग से यह आवाज़ सुनाई
दी, "मैंने उसकी महिमा की है और फिर करूंगा ।" २९ जब भीड़ ने यह
आवाज़ सुनी तो कुछ ने सोचा कि बादल गरजा और कुछ ने कहा कि
स्वर्गदूत ने बातें की । ३० तब यीशु ने उनसे कहा, "यह आवाज़
मेरे लिए नहीं, किन्तु तुम्हारे लाभ के लिए थी । ३१ संसार के न्याय का
समय आ पहुंचा है—और वह समय भी जब इस संसार का सरदार,
शैतान[3] निकाला जाएगा । ३२ और जब मैं क्रूस पर[4] चढ़ाया जाऊंगा, तो
प्रत्येक को अपने पास खींच लूंगा ।" ३३ यह उन्होंने इस बात को प्रगट
करने के लिए कहा कि उनकी मृत्यु किस प्रकार होगी । ३४ भीड़ ने पूछा,
"आप मरेंगे ? हम समझते हैं कि मसीह सर्वदा जीवित रहेगा और कभी
नहीं मरेगा, आप किस मसीह के विषय में बोल रहे हैं ?" ३५ यीशु ने उत्तर
दिया, "थोड़ी और देर तक मेरी ज्योति तुममें चमकेगी । ज्योति के
चमकने तक उसमें चलते रहो, और जहां जाना चाहो वहां अंधेरा होने से
पहले चले जाओ, क्योंकि तब मार्ग खोजने में देर हो जाएगी । ३६ जब तक
समय है तब तक ज्योति को काम में लाओ, तब तुम ज्योति की सन्तान
ठहरोगे ।"

यह कह कर यीशु चले गए और उनसे छिपे रहे । ३७ परन्तु इतने

---

२ मूलतः, "यदि कोई"; ३ तात्पर्य यही है; २ कुरिन्थियों ४:४, इफिसियों २:२ और ६:१२ पढ़िये; ४ तात्पर्य यही है;

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
आश्चर्यकर्म करने के बाद भी अधिकांश लोगों को विश्वास न हुआ कि
वह मसीह हैं। ३८ यशायाह ने ठीक इसी की भविष्यद्वाणी की थी :
"प्रभु कौन हमारा विश्वास करेगा ? परमेश्वर के सामर्थी आश्चर्यकर्मों
को प्रमाण कौन मानेगा ?"[५] ३९ परन्तु वे विश्वास कर भी नहीं सकते थे,
क्योंकि यशायाह ने यह भी कहा। ४० "परमेश्वर[६] ने उनकी आंखें अंधी
और उनका मन कठोर किया है ताकि वे न देखें न समझें न ही मेरी ओर
फिरें कि मैं उन्हें चंगा करूं।" ४१ यह भविष्यद्वाणी करते समय यशायाह
का संकेत यीशु की ओर था, क्योंकि उसने मसीह की महिमा का दर्शन
पाया था। ४२ तौभी, बहुत से यहूदी अगुवों को विश्वास था कि वह
मसीह हैं परन्तु वे इस भय के कारण किसी से नहीं कहते थे कि कहीं फरीसी
उन्हें आराधनालय से बाहर न निकाल दें। ४३ क्योंकि मनुष्यों की प्रशंसा
उन्हें परमेश्वर की प्रशंसा से अधिक प्रिय थी।

४४ यीशु ने ऊंचे स्वर में भीड़ से कहा, "यदि तुम मुझ पर विश्वास
करते हो, तो तुम वास्तव में परमेश्वर पर विश्वास कर रहे हो। ४५
क्योंकि जब तुम मुझे देखते हो, तो उसे भी देख रहे हो जिसने मुझे भेजा।
४६ मैं इस अंधकारमय संसार में ज्योति के सदृश्य चमकने के लिए आया
हूं, ताकि जितने मुझ पर विश्वास लाएं, वे फिर अंधेरे में न चलें। ४७
यदि कोई मेरी सुनता है परन्तु मेरी नहीं मानता, तो मैं उसे दोषी नहीं
ठहराता क्योंकि मैं दोषी ठहराने के लिए नहीं परन्तु संसार को बचाने के
लिए आया हूं। ४८ किन्तु जितने मुझे और मेरे संदेश को ग्रहण नहीं करते,
अन्तिम दिन में उनका न्याय मेरे वचनों के आधार पर होगा। ४९
क्योंकि ये मेरे स्वयं के विचार नहीं हैं, परन्तु जो पिता ने मुझे तुम को
बताने को कहा, वह मैंने तुम्हें बता दिया है। ५० और मैं जानता हूं कि
उसकी शिक्षाओं से अनन्त जीवन प्राप्त होता है, इसलिए वह जो कुछ
मुझ से कहने को कहता है, मैं वही कहता हूं।"

---

५ मूलतः; "जो समाचार हमें दिया गया, उसका किसने विश्वास किया ?" यशायाह ५३:१ ६ मूलतः "उसने" यशायाह ६:१०। यहां यूनानी भाषा में मूल इब्रानी भाषा की बहुत स्वतंत्र व्याख्या की गई है;

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१३ फसह के दिन संध्या समय यीशु ने मालूम किया कि पिता के पास लौटने से पहले इस संसार में यह उसकी अन्तिम रात होगी। भोजन के समय शैतान ने यहूदा इस्करियोती (शमौन के पुत्र) को पहले ही बता दिया था कि यही वह रात है जिसमें वह यीशु को पकड़वाने की अपनी योजना पूरी करे। यीशु तो जानते थे कि पिता ने उन्हें सब कुछ दिया है और यह कि वह परमेश्वर के पास से आए हैं और परमेश्वर के पास लौट जाएंगे। और कि वह अपने शिष्यों से अत्यधिक प्रेम रखते थे।
४ इसलिए उन्होंने खाने की मेज़ से उठकर अपना चोगा उतारा और
अपनी कमर[1] पर एक तौलिया बांधा, ५ चिलमची में पानी भरा, और चेलों
के पैर धोने तथा अपनी कमर में बंधे तौलिए से पोंछने लगे। ६ जब वह
शमौन पतरस के पास पहुंचे, तो पतरस ने उनसे कहा, "गुरु, आपको इस
प्रकार हमारे पैर नहीं धोने चाहिए।" ७ यीशु ने उत्तर दिया, "तुम अभी
नहीं समझते कि मैं यह क्यों कर रहा हूं परन्तु किसी दिन समझ जाओगे।"
८ पतरस ने विरोध करते हुए कहा, "नहीं, आप मेरे पैर कभी नहीं धोएंगे।"
यीशु ने उत्तर दिया, "परन्तु यदि मैं न धोऊं, तो तू कभी मेरा साझेदार
नहीं बन सकता।" ९ शमौन पतरस ने कहा, "तब आप मेरे हाथ और
सिर को भी धोइए केवल पैर ही नहीं।" १० यीशु ने उत्तर दिया, "जो
पूरा नहा चुका है उसे पूरी रीति से स्वच्छ होने के लिए केवल पैर के ही
धुलाने की आवश्यकता है। अब तुम साफ हो—परन्तु यहां तुम सबके
विषय में यह बात सच नहीं है।" ११ क्योंकि यीशु जानते थे कि कौन
उन्हें पकड़वाएगा। "तुम सब शुद्ध नहीं हो," उनके कहने का यही
अर्थ था।

१२ उनके पैर धोने के पश्चात उन्होंने फिर अपना चोगा पहिना और
बैठकर पूछा, "क्या तुम समझे, मैं क्या कर रहा था? १३ तुम मुझे 'गुरु'
और 'प्रभु' कहकर पुकारते हो और यह ठीक ही कहते हो, क्योंकि यह
सच है। १४ इसलिए जब मैंने प्रभु और गुरु होते हुए तुम्हारे पैर धोए, तो
तुम्हें भी एक दूसरे के पैर धोने चाहिएं। १५ मैंने तुम्हें उदाहरण दिया है
जिस पर तुम चलो: जैसा मैंने तुम से किया वैसा ही तुम भी करो।

१ जैसा सबसे निम्न श्रेणी के गुलाम पहनते थे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

यह कितना सच है कि दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं । न ही संदेशवाहक
अपने भेजने वाले से बढ़ कर है । १७ तुम इन बातों को जानते हो—अब
इन पर चलो । आशिष का यही मार्ग है । १८ मैं ये बातें तुम सबसे ही
कह रहा हूं : मैं तुम में से प्रत्येक को जिसको मैंने चुना अच्छी तरह से
जानता हूं । पवित्रशास्त्र में लिखा है, 'जो मेरे साथ रोटी खाता है वही
मुझे पकड़वाएगा ।' और यह शीघ्र ही पूरा होगा । १९ मैं तुम्हें ये बातें
अभी इसलिए बताता हूं, कि इनके पूरा होने पर तुम मुझ पर विश्वास
करो । २० सच है कि जो कोई पवित्र आत्मा[2] को ग्रहण करता है, जिसे
मैं भेजूंगा, वह मुझें ग्रहण करता है । और मुझे ग्रहण करना पिता को
ग्रहण करना है जिसने मुझे भेजा ।"

२१ यीशु अब आत्मा में अत्यन्त व्याकुल हुए और बोले, "हां, यह
सच है—तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा ।" २२ चेलों ने यह सोचते
हुए कि वह किसके विषय में कह रहे हैं, एक दूसरे की ओर देखा । २३
मैं[3] मेज़ पर यीशु के समीप[4] बैठा था, क्योंकि उनका घनिष्ठ मित्र था ।
२४ शमौन पतरस ने मेरी ओर संकेत करके मुझे उनसे यह पूछने को
कहा कि कौन इतना भयानक कार्य करेगा । २५ इसलिए मैंने उनकी
ओर मुड़कर[5] पूछा, "हे प्रभु, वह कौन है ?" २६ उन्होंने मुझे बताया,
"जिसका सम्मान मैं रोटी का टुकड़ा रस में डुबा कर देने से करूंगा,
वही है ।"[6] और जब उन्होंने रस में डुबाया हुआ रोटी का टुकड़ा शमौन
इस्करियोती के पुत्र यहूदा को दिया । २७ और जब उसने खा लिया, तो
शैतान उसमें समाया । तब यीशु ने उससे कहा, "जल्दी जा और अपना

---

२ तात्पर्य यही है । मूलतः, "मेरे भेजे हुए को ।"
३ मूलतः, "यीशु के चेलों में से एक जिससे यीशु प्रेम रखते थे ।" सभी टीकाकार सहमत हैं कि वह यूहन्ना ही थे जो इस पुस्तक के लेखक हैं ।
४ मूलतः, यीशु की ओर झुका हुआ" उस समय की प्रथा थी—बाईं कुहनी को मेज पर रखकर झुकना । यूहन्ना यीशु के पास उनके बाजू में बैठा था । ५ मूलतः, "यीशु की ओर झुककर" अपना प्रश्न फुसफुसा कर पूछने के लिए । ६ मूलतः, "जिसे मैं यह रोटी का टुकड़ा डुबोकर दूँगा, वही है ।" उस समय के रीति-रिवाज अनुसार इसी प्रकार सम्मानित अतिथि की पहचान होती थी ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

काम कर ले।" २८ परन्तु मेज़ पर बैठने वालों में से किसी ने यीशु की बात नहीं समझी। २९ कुछ ने सोचा कि यहूदा, उनका खजांची था इसलिए यीशु उससे कह रहे हैं कि जाकर भोजन का दाम चुका या ग़रीबों को कुछ पैसे बांट दे। ३० यहूदा तुरन्त वहां से गया और वह रात का समय था।

३१ जैसे ही यहूदा ने कमरा छोड़ा, यीशु ने कहा, "मेरा समय आ गया है, परमेश्वर की महिमा शीघ्र ही मुझे घेर लेगी—और मेरे साथ जो कुछ बीतेगा उसके द्वारा परमेश्वर की महिमा होगी। ३२ और परमेश्वर अति शीघ्र ही अपनी महिमा मुझे देगा। ३३ मेरे प्रिय बच्चो अब थोड़ा समय बाकी है अब मैं तुम्हें छोड़कर चला जाऊंगा! तब तुम मुझे खोजोगे परन्तु तुम मुझ तक नहीं आ सकोगे—जैसे मैंने यहूदी अगुवों को बताया। ३४ और इसलिए अब मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं—एक दूसरे से उतना ही प्रेम रखो जितना मैं तुमसे रखता हूं। ३५ एक दूसरे के प्रति तुम्हारा अटूट प्रेम ही संसार को यह प्रमाणित करेगा कि तुम मेरे चेले हो।"

३६ शमौन पतरस ने पूछा "गुरुजी, आप कहां जा रहे हैं ?" और यीशु ने उत्तर दिया, "तुम अभी मेरे साथ नहीं जा सकते, परन्तु बाद में तुम मेरे पीछे आओगे।" ३७ उसने पूछा, "परन्तु अभी मैं क्यों नहीं जा सकता ?" मैं तो आपके लिए मरने को तैयार हूं।" ३८ यीशु ने उत्तर दिया, "मेरे लिए मरने को तैयार ? नहीं—कल सुबह मुर्ग के बांग देने से पहले, तू तीन बार मुझे जानने से भी इन्कार करेगा!

१४ तुम न घबराओ। परमेश्वर पर विश्वास रखो और मुझ पर भी। २, ३ जहां मेरा पिता रहता है वहां बहुत से घर हैं, मैं तुम्हारे लिए उनको तैयार करने जा रहा हूं! जब वे सब तैयार हो जाएंगे तो मैं वापिस आकर तुम्हें अपने साथ ले जाऊंगा, तब तुम वहीं रहोगे जहां मैं रहूंगा। यदि ऐसा न होता तो मैं तुम से स्पष्ट कह देता। ४ और जहां मैं जाता हूं वहां पहुंचने का मार्ग तुम जानते हो" ५ थोमा ने कहा,

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)
"नहीं, हम नहीं जानते। हम यह तक नहीं जानते कि आप कहां जा रहे
हैं—फिर हम मार्ग कैसे जान सकते हैं?" ६ यीशु ने उसे बताया, "मार्ग
सत्य तथा जीवन मैं ही हूं। मेरे सिवाय किसी दूसरे के द्वारा पिता के पास
कोई नहीं पहुंच सकता। ७ यदि तुम जानते कि मैं कौन हूं, तो यह भी
जानते कि मेरा पिता कौन है! अब तुम उसे जानते हो—और तुमने
उसे देखा भी है"

८ फिलिप्पुस ने कहा, "प्रभु, हमें पिता को दिखाइए, तो हम
सन्तुष्ट हो जाएंगे।" ९ यीशु ने उत्तर दिया, "फिलिप्पुस, मैं इतने समय
तक तुम्हारे साथ रहा क्या तुम अब तक नहीं जानते कि मैं कौन हूं?
जिसने मुझे देखा है उसने मेरे पिता को भी देखा है! फिर तुम उसको
देखने के लिए क्यों पूछते हो? १० क्या तुम्हें विश्वास नहीं कि मैं पिता
में हूं और पिता मुझ में है? मैं जो वचन कहता हूं वे मेरे नहीं, परन्तु मेरे
पिता के हैं जो मुझ में है! और वह अपने कार्य मेरे द्वारा करता है। ११
केवल विश्वास कर—कि मैं पिता में हूं और पिता मुझ में है। और नहीं
तो इसलिए विश्वास कर कि तूने मुझे आश्चर्यकर्मों को करते देखा है।

१२, १३ "मैं पूरी सच्चाई के साथ कहता हूं, मुझ पर विश्वास करने
वाले भी ऐसे आश्चर्यकर्मों को करेंगे जैसे मैंने किए हैं, यहां तक कि उनसे
बढ़ कर करेंगें, क्योंकि मैं अपने पिता के साथ रहने के लिए जा रहा हूं।
तुम मेरा नाम लेकर, उससे जो कुछ मांगोगे मैं उसे करूंगा। क्योंकि
मैं उसका पुत्र होकर तुम्हारे लिए जो कुछ करूंगा, उससे पिता की बड़ाई
होगी। १४ हां मेरा नाम लेकर जो चाहो मांगो और मैं वही करूंगा।

१५, १६ "यदि तुम मुझे प्यार करते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे,
और मैं पिता से बिनती करूंगा और वह तुम्हें दूसरा सहायक देगा, जो
तुम्हें कभी नहीं छोड़ेगा? १७ वह पवित्र आत्मा है, जो सत्य पर तुम्हें ले
चलता है। संसार उसे ग्रहण नहीं कर सकता क्योंकि वह उसकी प्रतीक्षा
नहीं कर रहा है और उसे पहचानता भी नहीं परन्तु तुम उसे पहचानते
हो, क्योंकि अभी वह तुम्हारे साथ रहता है और किसी दिन तुम में निवास
करेगा!

१८ "नहीं, मैं तुम्हें नहीं त्यागूंगा न इस संकट में अनाथ छोड़ूंगा—

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
मैं तुम्हारे पास आऊंगा । १९ थोड़े ही समय में मैं इस संसार से चला
जाऊंगा, परन्तु फिर भी मैं तुम्हारे साथ उपस्थित रहूंगा । क्योंकि मैं फिर
जीवित होऊंगा—और तुम भी जीवित होगे । २० जब मैं पुनः जीवन
प्राप्त करूंगा तब तुम जानोगे कि मैं अपने पिता में हूं, और तुम मुझमें;
और मैं तुममें । २१ जो मेरी आज्ञाओं को मानता है, वही है जो मुझे प्यार
करता है, और चूंकि वह मुझ से प्रेम रखता है मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा,
और मैं भी रखूंगा, और मैं स्वयं को उस पर प्रकट करूंगा ।" २२ यहूदा (यहूदा
इस्करियोति नहीं, परन्तु इसी नाम का उनका दूसरा चेला) ने
उनसे पूछा, "महाशय, आप क्यों स्वयं को केवल हम शिष्यों पर ही प्रगट
करेंगे और संसार पर नहीं ?" २३ यीशु ने उत्तर दिया, "क्योंकि उन्हीं
पर स्वयं को प्रगट करूंगा जो मुझे प्यार करते हैं और मेरी आज्ञाओं को
मानते हैं । पिता भी उनको प्यार करेगा, और हम उनके पास आएंगे
और उनके साथ निवास करेंगे । २४ परन्तु संसार न तो मुझ से प्रेम रखता
है न ही मेरी आज्ञाओं को मानता है । और याद रखो, तुम्हारे प्रश्न का
उत्तर मैं अपनी ओर से नहीं दे रहा हूं, परन्तु पिता की ओर से जिसने
मुझे भेजा है ।

२५ "मैं तुम्हारे साथ रहते हुए अभी तुम्हें ये बातें बताता हूं ।
२६ परन्तु जब पिता उस सहायक[1] को मेरा[2] प्रतिनिधि बनाकर
भेजेगा—अर्थात पवित्र आत्मा को—तो वह तुम्हें और अधिक सिखाएगा
तथा मेरी सब बातें तुम्हें याद दिलाएगा । २७ मैं तुम्हें वरदान देकर जा
रहा हूं—मन और हृदय की शान्ति ! और जो शान्ति मैं देता हूं वह
संसार की शान्ति के समान शीघ्र नष्ट होने वाली नहीं है ! इसलिए न
घबराओ, न डरो ।[3] २८ याद है मैंने क्या कहा था—मैं जा रहा हूं, परन्तु
तुम्हारे पास फिर आऊंगा । यदि तुम वास्तव में मुझको प्यार करते हो
तो इससे प्रसन्न होगे, क्योंकि अब मैं पिता के साथ जा सकता हूं, जो
मुझ से महान है । २९ मैंने इन बातों के होने से पहले इन्हें तुम्हें बता
दिया है, ताकि इनके होने पर तुम (मुझ पर)[4] विश्वास करो ।

---

१ अथवा, "वकील" २ मूलतः, "मेरे नाम" ३ तात्पर्य यही है
४ तात्पर्य यही है ।

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)
३० तुम से बातें करने के लिए अब मेरे पास अधिक समय नहीं है, क्योंकि
इस संसार का दुष्ट राजकुमार (शैतान) बढ़ा चला आ रहा है।
उसका मुझ पर कुछ अधिकार नहीं, ३१ परन्तु मैं अपने पिता के प्रत्येक
आदेश को स्वेच्छा से पूरा करूंगा ताकि संसार जाने कि मैं पिता को प्यार
करता हूं। आओ यहां से चलें।

१५ "सच्ची दाखलता मैं हूं, और मेरा पिता माली है। २ जो डाली
फल नहीं लाती उसे वह काट डालता है। और जो फल लाती हैं
उन्हें वह छांटता है ताकि और फलें। ३ जो आदेश मैंने तुम्हें दिए हैं
उनके द्वारा उसने तुम्हें चुन लिया है ताकि तुम अधिक सामर्थी और उप-
योगी बनो। ४ तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में; क्योंकि कोई
डाली दाखलता से अलग रह कर फल नहीं सकती। न ही तुम मुझ से
अलग रहकर फलवन्त हो सकते हो। ५ हां, मैं दाखलता हूं, तुम डालियां
हो। जो कोई मुझमें रहे और मैं उसमें वही अधिक फलवन्त होगा।
क्योंकि मुझसे अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते। ६ यदि कोई
मुझसे अलग हो, तो उसे बेकार डाली के समान फेंक दिया जाता है और
वह सूख जाता और इकट्ठा करके जला दिया जाता है। ७ परन्तु यदि
तुम मुझ में बने रहोगे और मेरी आज्ञाओं को मानोगे तो जो चाहो विनती
करो, और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा। ८ मेरे सच्चे चेले बहुतायत से
फल लाते हैं। इससे मेरे पिता की बड़ी महिमा होती है। ९ जैसा पिता
ने मुझसे प्रेम रखा वैसा ही मैंने भी तुम से प्रेम रखा है। मेरे प्रेम में बने
रहो। १० जब तुम मेरी आज्ञाओं को मानते हो, तो मेरे प्रेम में बने रहते
हो जैसा मैं अपने पिता की आज्ञाओं को मानता हूं और उसके प्रेम में बना
रहता हूं। ११ मैंने ये बातें तुम से इसलिए कहीं कि तुम मेरे आनन्द से
परिपूर्ण हो जाओ। हां, तुम्हारे आनन्द का प्याला छलकता रहेगा!
१२ "यह मेरा आदेश है कि तुम एक दूसरे को इतना प्यार करो
जितना मैं तुमको करता हूं १३ और सर्वोच्च प्रेम इससे प्रगट होता है

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे। १४ और यदि तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करो, तो तुम मेरे मित्र हो। १५ मैं अब तुम्हें दास नहीं कहता, क्योंकि स्वामी अपनी भेद की बातें दास को नहीं बताता। अब तुम मेरे मित्र हो, यह इस बात से प्रमाणित है कि मैंने तुम से वे सब बातें कह दीं जो पिता ने मुझे बताईं। १६ तुमने मुझे नहीं चुना! मैंने तुम्हें चुना! मैंने तुम्हें नियुक्त किया कि तुम जाओ और सदा उत्तम फल लाओ, ताकि तुम पिता से मेरा नाम लेकर कुछ भी मांगो, वह तुम्हें देगा। १७ यह मेरी आज्ञा है कि तुम एक दूसरे से प्रेम रखो।

१८ "यदि संसार तुमसे बैर रखता है तो याद रखो कि तुमसे पहले उसने मुझसे भी बैर रखा! १९ यदि तुम संसार के होते तो संसार तुमसे प्रेम रखता, परन्तु वह तुमसे बैर रखता है क्योंकि तुम उसके नहीं हो—मैंने तुमको संसार से चुन लिया है! २० तुमको याद है कि मैंने तुमसे क्या कहा? 'दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं।' इसलिए जब उन्होंने मुझ को सताया, तो स्वाभाविक है कि वे तुम्हें भी सताएंगे। और यदि उन्होंने मेरी सुनी, तो तुम्हारी भी सुनेंगे! २१ संसार के लोग तुम्हें सताएंगे क्योंकि तुम मेरे हो, और वे परमेश्वर को नहीं जानते जिसने मुझे भेजा है। २२ यदि मैं न आता और उनसे बातें न करता तो वे दोषी न ठहरते। परन्तु अब उनके पास पाप करने के लिए कोई बहाना नहीं। २३ यदि कोई मुझसे बैर रखता है तो मेरे पिता से भी बैर रखता है। २४ यदि मैंने इतने सामर्थी चमत्कार उनके मध्य न किए होते, तो वे दोषी न गिने जाते। किन्तु इन आश्चर्यकर्मों को देखने पर भी उन्होंने मुझ से और मेरे पिता, दोनों से बैर किया। २५ इससे भविष्यद्वक्ताओं का यह वचन (मसीह के संबंध में) पूरा होता है, "उन्होंने अकारण मुझ से बैर किया।" २६ परन्तु मैं तुम्हारे पास एक सहायक भेजूंगा अर्थात पवित्र आत्मा जो सब सत्य का स्रोत है। वह पिता की ओर से तुम्हारे पास आएगा और तुम्हें मेरे विषय में सब बातें बताएगा। २७ और तुम्हें भी मेरे विषय में प्रत्येक को बताना चाहिए, क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ रहे हो।"

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

१६ "मैंने तुम्हें ये बातें बता दी हैं कि तुम आने वाली कठिन परिस्थितियों
में डगमगा न जाओ ।[1] २ क्योंकि तुम आराधनालय से निकाले
जाओगे, वास्तव में वह समय आ रहा है जब तुम्हारा प्राण लेने वाले
सोचेंगे कि वे परमेश्वर का काम कर रहे हैं । ३ क्योंकि उन्होंने पिता
को और मुझे कभी नहीं जाना है । ४ हां, मैं अभी से तुमको ये सब बातें
बता रहा हूं, ताकि उनके होने पर तुम याद करो कि मैंने तुम्हें चितौनी
दी थी मैंने तुम्हें पहले से ही बताया था कि थोड़े समय तक मुझको
तुम्हारे संग रहना है । ५ परन्तु अब मैं उसके पास जाता हूं जिसने मुझे
भेजा है, और तुम में से कोई भी जानना नहीं चाहता कि मैं किस अभि-
प्राय से जा रहा हूं ।[2] ६ पूछने के बदले तुम्हारा मन शोक से भरा हुआ
है । ७ परन्तु यह वास्तविक बात है कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अति
हितकर है क्योंकि यदि मैं न जाऊं, तो सहायक नहीं आएगा । यदि
जाऊंगा तो वह आएगा—क्योंकि मैं उसे तुम्हारे पास भेजूंगा । ८ आने
पर वह संसार को उसके पाप के कारण कायल करेगा । वह परमेश्वर की
धार्मिकता और न्याय[3] का भी निश्चय दिलाएगा । ९ मुझ पर अविश्वास
रखना ही उसका पाप है । १० धार्मिकता का निश्चय इसलिए क्योंकि
मैं पिता के पास जाता हूं और तुम मुझें फिर नहीं देखोगें, ११ न्याय का
निश्चय इसलिए क्योंकि इस संसार के राजकुमार का न्याय पहले ही हो
चुका है ।

१२ ओह, मैं तो तुम्हें बहुत सी बातें बताना चाहता हूं, परन्तु
तुम अभी सब नहीं समझ सकते । १३ जब पवित्र आत्मा जो सत्य है
आएगा, तो वह पूर्ण सत्य में तुम्हारी अगुवाई करेगा । वह अपने विचारों
को प्रस्तुत नहीं करेगा परन्तु केवल वही जो उसने सुना है । वह भविष्य के
विषय में तुम्हें बताएगा । १४ वह मेरी बड़ाई करेगा और मेरी महिमा
तुम पर प्रगट कर मुझे बहुत आदर देगा । १५ पिता की सब महिमा

---

१ तात्पर्य यही है ।

२ मूलतः; तुममें से कोई मुझसे नहीं पूछता कि तू कहां जाता है ? यह प्रश्न इससे पूर्व पूछा गया था (यूहन्ना १३:३६; १४:५), परन्तु स्पष्टतः इतने गहरे अर्थ से नहीं । ३ मूलतः, वह आकर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर करेगा ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
मेरी है : मेरे कथन का कि वह मेरी महिमा तुम पर प्रगट करेगा, यही अर्थ है।

१६ थोड़ी ही देर में मैं चला जाऊंगा और तुम मुझे फिर नहीं देखोगे, परन्तु उसके थोड़ी ही देर पश्चात तुम मुझे फिर देखोगे !" १७, १८ उनके कुछ चेलों ने पूछा, "वह क्या कह रहे हैं ? 'पिता के पास जाता हूं' इससे इनका क्या अर्थ है ?" १९ यीशु ने समझ लिया कि वे उनसे प्रश्न करना चाहते हैं, इसलिए उन्होंने कहा, "क्या तुम आपस में मेरी बात का अर्थ पूछते हो ?" २० मैं तुमसे सच कहता हूं मुझ पर जो बीतेगी उससे संसार ख़ुश होगा, और तुम रोओगे। परन्तु (जब तुम मुझें फिर[४] देखोगे) एकाएक तुम्हारा रोना अद्भुत आनन्द में बदल जाएगा। २१ यह आनन्द उसी प्रकार का होगा जो पीड़ा से कराहती स्त्री को बालक उत्पन्न हो जाने के बाद होता है—दुःख के बदले वह आनन्दित होकर पीड़ा को भूल जाती है। २२ अभी तुम्हें दुख है, परन्तु मैं तुम्हें फिर देखूंगा, तब तुम आनन्दित हो जाओगे और तुम्हारा वह आनन्द कोई तुमसे छीन न सकेगा। २३ उस समय तुम्हें मुझ से कुछ मांगने की आवश्यकता न होगी, क्योंकि तुम स्वयं पिता के पास जाकर उससे मांग सकते हो, क्योंकि मेरा नाम लेने के कारण जो कुछ तुम पिता से मांगोगे वह तुम्हें देगा। २४ तुमने इसे पहले नहीं परखा, पर अब आरम्भ करो।[५] मेरा नाम लेकर मांगो और तुम पाओगे और तुम्हारे आनन्द का प्याला छलकता रहेगा।

२५ अभी तो मैंने दृष्टान्त रूप में तुम्हें ये बातें बताई हैं, परन्तु समय आएगा जब इसकी आवश्यकता नहीं रहेगी और मैं पिता के विषय में सब बातें तुम्हें स्पष्ट बताऊंगा। २६ तब तुम मेरे नाम ही के द्वारा अपने निवेदन पिता के सामने प्रस्तुत कर सकोगे ![६] और इनको दिलाने के लिए मुझे पिता से विनती करने की आवश्यकता नहीं होगी, २७ क्योंकि पिता स्वयं तुमसे बहुत प्रेम रखता है इसलिए कि तुम मुझे प्यार करते हो और विश्वास करते हो कि मैं पिता के पास से आया। २८ हां, मैं पिता के पास से इस संसार में आया और संसार छोड़कर पिता के पास लौट जाऊंगा।"

४ तात्पर्य यही है। ५ तात्पर्य यही है। ६ मूलतः, तुम मेरे नाम से मांगोगे। उक्त व्याख्या इस विचार का आधुनिक रूप ही है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

२९ उनके शिष्यों ने कहा, "हां, अब आप स्पष्ट बता रहे हैं, पहे-
लियों में नहीं। ३० अब हम जान गए कि आप सब जानते हैं और किसी
को आपको कुछ बताने की आवश्यकता नहीं है।[७] अतः हम विश्वास
करते हैं कि आप परमेश्वर के पास से आए हैं।" ३१ यीशु ने पूछा, "क्या
तुम अब विश्वास करते हो ? ३२ परन्तु समय आ रहा है—वास्तव में,
आ पहुंचा है जब तुम तितर-बितर हो जाओगे, सब मुझे अकेला छोड़ कर
अपने अपने घर चले जाओगे। तौभी मैं अकेला नहीं रहूंगा क्योंकि पिता
मेरे साथ है। ३३ मैंने तुम्हें यह सब बता दिया है ताकि तुम्हारे मन और
हृदय में शान्ति रहे। यहां पृथ्वी पर तुम्हें अनेक क्लेश और दुख होंगे,
परन्तु प्रसन्न हो क्योंकि मैंने संसार पर जय पा ली है।"

१७ जब यीशु इन बातों को कह चुके, तो उन्होंने स्वर्ग की ओर दृष्टि
की ओर कहा, "हे पिता, समय आ गया है। अपने पुत्र की महिमा
प्रगट कर ताकि वह भी तेरी महिमा प्रगट कर सके। २ क्योंकि तूने उसे
समस्त संसार के प्रत्येक स्त्री पुरुष के ऊपर अधिकार दिया है। जितनों
को तू ने उसे सौंपा है, वह उन सभी को अनन्त जीवन देता है। ३ और अनन्त
जीवन को पाने का मार्ग यह है—तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर और मसीह
यीशु को जानना जिसे तू ने पृथ्वी पर भेजा है ! ४ जो आज्ञाएं तू ने
मुझे दीं, मैंने उन सब का पालन कर इस पथ्वी पर तेरी महिमा की है।
५ और अब, पिता, अपनी उपस्थिति में मेरी उस महिमा को प्रगट कर
जिसके सृष्टि से पहले हम सहभागी थे।
६ "मैंने इन व्यक्तियों को तेरे विषय में सब कुछ बताया है। वे
संसार में थे, तब तूने उनको मुझे दिया था। वास्तव में वे सदा तेरे थे,
और तूने उनको मुझे दिया और उन्होंने तेरी आज्ञाएं मानी हैं। ७ अब
वे जानते हैं कि जो कुछ मेरे पास है वह तेरा ही दिया हुआ है। ८ क्योंकि

---

७ मूलतः, प्रयोजन नहीं कि कोई आप से पूछे अर्थात विचार विमर्श करे कि सत्य क्या है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
जो आज्ञाएं तूने मुझे दीं, वे मैंने उन्हें बता दीं, और उन्होंने ग्रहण किया
और निश्चय जान लिया कि मैं इस जगत में तेरी और से आया हूं, और
उनका विश्वास है कि तूने मुझे भेजा है। ९ मेरी विनती समस्त संसार
के लिए नहीं है, परन्तु इन्हीं के लिए जिन्हें तूने मुझे दिया हे क्योंकि ये तेरे
हैं। १० और वे सब इसलिए कि मेरे हैं, तेरे भी हैं, और तूने उनको मुझे
सौंपा है ताकि मेरी महिमा इनसे प्रगट हो। ११ अब मैं इन्हें छोड़कर
इस संसार से जा रहा हूं, और तेरे पास आ रहा हूं। हे पवित्र पिता, तू
उन सभी को सुरक्षित रख जिनको तूने मुझे सौंपा है—ताकि वे भी हमारे
समान एक हों और कोई न छूट जाए। १२ यहां रहते हुए मैंने तेरे घराने[1]
में उन सब की रक्षा की जिन्हें तूने मुझे सौंपा है। मैंने विनाश के पुत्र के
अतिरिक्त किसी को नाश नहीं होने दिया यह उस भविष्यद्वाणी के अनु-
सार हुआ जो धर्मशास्त्र में की गई थी। १३ और अब मैं तेरे पास आ
रहा हूं। उनके साथ रहते हुए मैंने उन्हें अनेक बातें बताईं ताकि वे मेरे
आनन्द से भर जाएं। १४ मैंने तेरे आदेश उन तक पहुंचा दिए हैं।
संसार उनसे घृणा करता है क्योंकि वे संसार के सदृश्य नहीं चलते, जैसा
मैं भी नहीं चलता हूं। १५ मैं यह विनती नहीं करता कि तू उन्हें संसार
से उठा ले, परन्तु यह कि तू उन्हें शैतान की सामर्थ से बचाए रखे।
१६ जैसे मैं, वैसे ही वे भी इस संसार के नहीं हैं। १७ सत्य के अपने वचनों
की शिक्षा देने के द्वारा तू उन्हें शुद्ध और पवित्र कर। १८ जैसा तूने
मुझे इस जगत में भेजा; वैसा ही मैं भी इनको इस जगत में भेज रहा हूं।
१९ वे सत्य और पवित्रता में बढ़ें—उनकी इस आवश्यकता की पूर्ति के
लिए मैं स्वयं को अर्पित करता हूं।

२० "मैं केवल इन्हीं के लिये प्रार्थना नहीं कर रहा हूं, परन्तु उन
सब के लिए जो भविष्य में विश्वास करेंगे और इनकी गवाही सुनकर मेरे
पास आएंगे। २१ उन सभी के लिए मेरी यही प्रार्थना है कि वे एक हृदय
और एक मन हों, जैसे तू और मैं हैं। पिता—जैसे तू मुझ में है और मैं
तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हों ताकि संसार विश्वास करे कि तूने मुझे
भेजा। २२ जो महिमा तू ने मुझे दी मैंने उन्हें भी दी कि वैसे ही एक हों

---

१ मूलतः, मैंने तेरे उस नाम से, जो तूने मुझे दिया है, उनकी रक्षा की।"

Digitization by American Academy of Indic Studies-AAIS(USA)

जसे हम एक हैं—२३ मैं उनमें और तू मुझ में, सब सिद्ध होकर एक हो
जाएं—ताकि संसार जाने कि तूने मुझे भेजा और समझें कि तू उनसे
उतना ही प्रेम रखता है जितना मुझ से । २४ हे पिता, मैं चाहता हूं कि
वे मेरे साथ रहें—इनको तूने मुझे दिया है—ताकि वे मेरी महिमा को देख
सकें । तूने मुझे महिमा दी क्योंकि सृष्टि के आरम्भ से भी पहले तू ने मुझ
से प्रेम रखा । २५ हे धार्मिक पिता, संसार तुझे नहीं जानता, परन्तु मैं
जानता हूं और ये चेले जानते हैं कि तूने मुझे भेजा है । २६ और मैंने तुझे
उन पर प्रगट किया है और करता रहूंगा ताकि मेरे प्रति तेरा अपार प्रेम
उनमें भी हो और मैं उनमें रहूं ।"

१८ यीशु ने ये बातें कहीं और अपने चेलों के साथ किद्रोन नाले को
पार करके जैतून वृक्षों के बगीचे में आए । २ उनके पकड़वाने
वाले यहूदा को यह स्थान मालूम था क्योंकि यीशु अनेक बार अपने चेलों
के साथ वहां गए थे । ३ महायाजकों और फरीसियों ने यहूदा के साथ
जाने के लिए सिपाहियों की एक पलटन और प्यादे तैयार किए । वे
जलती हुई मशालों, और हथियारों को लिए जैतून की बारी में पहुंच
गए । ४, ५ यीशु को पूरी रीति से मालूम था कि उनके साथ क्या होने
वाला है । उनसे मिलने के लिए आगे बढ़कर उन्होंने पूछा, "तुम किसे
खोज रहे हो ?" उन्होंने उत्तर दिया, "यीशु नासरी को ।" यीशु ने कहा,
"वह मैं ही हूं ।" ६ जैसे ही उन्होंने यह कहा, वे सब पीछे हटकर भूमि
पर गिर पड़े ! ७ उन्होंने फिर उनसे पूछा, "तुम किसकी खोज में हो ?"
उन्होंने फिर उत्तर दिया, "यीशु नासरी की ।" ८ यीशु ने कहा, "मैंने
कह दिया मैं वही हूं, और इसलिए कि तुम मुझे ढूंढ़ते हो, इन्हें जाने दो ।"
९ ऐसा करके उन्होंने अपना वह वचन पूरा किया, "जिन्हें तू ने मुझे
दिया, उनमें से मैंने एक को भी न खोया. . ." १० तब शमौन पतरस ने
तलवार खींची और महायाजक के नौकर मलखुस का दाहिना कान काट
गिराया ।११ परन्तु यीशु ने पतरस से कहा, "तू अपनी तलवार म्यान में
रख । क्या मैं उस प्याले में से न पीऊं जो पिता ने मुझे दिया है ?"

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१२ तब यहूदी प्यादों, सिपाहियों और उनके सूबेदारों ने यीशु
को पकड़कर बांध लिया। १३ पहले वे उनको हन्ना के पास ले गंए जो
काइफा का ससुर और उस वर्ष का महायाजक था। १४ काइफा वही
था जिसने दूसरे यहूदी अगुवों को बताया था, "सब लोगों के लिए एक
पुरुष का मरना भला है।"

१५ महायाजक की पहिचान का एक अन्य चेला और शमौन पतरस
भी उनके पीछे हो लिए। इस कारण उस चेले को यीशु के साथ आंगन
में प्रवेश करने की अनुमति मिल गई, १६ परन्तु पतरस द्वार के बाहर
खड़ा रहा। तब दूसरे चेले ने द्वारपालिन से बातें कीं और उसने पतरस
को अन्दर आने दिया। १७ द्वारपालिन ने पतरस से पूछा, "क्या तू भी
यीशु के चेलों में से है?" उसने कहा, "नहीं, मैं नहीं हूं!" १८ उस समय
ठंड थी इसलिए प्यादे और घर के नौकर आग जला कर ताप रहे थे।
पतरस भी उनके साथ खड़ा, आग ताप रहा था।

१९ अन्दर, महायाजक ने यीशु से उनके चेलों और उनकी शिक्षाओं
के संबंध में प्रश्न करना आरम्भ किया। २० यीशु ने उत्तर दिया,
"मेरी शिक्षाओं को सभी जानते हैं क्योंकि मैंने आराधनालय और मन्दिर
में बराबर उपदेश दिया है, सब यहूदी अगुओं ने मेरी सुनी है और मैंने
कोई बात गुप्त नहीं रखी। २१ तुम मुझ से यह प्रश्न क्यों पूछ रहे हो?
उनसे पूछो जिन्होंने मेरी सुनी है! उनमें से कुछ यहां उपस्थित हैं। वे
जानते हैं मैंने क्या कहा।" २२ वहां खड़े एक सिपाही ने यीशु को थप्पड़
मारकर कहा, "महायाजक को तू इस प्रकार उत्तर देता है?" २३
यीशु ने कहा, "यदि मैंने झूठ कहा हो तो उसका प्रमाण दे। क्या
सच बोलने के कारण तुझे किसी व्यक्ति को मारना चाहिए?" २४
तब हन्ना ने महायाजक काइफा के पास यीशु को बंधे हुए भेज
दिया।

२५ इसी बीच जब शमौन पतरस आग के पास खड़ा था, उससे
फिर पूछा गया, "क्या तू उसके चेलों में से नहीं है?" उसने उत्तर दिया,
"कदापि नहीं!" २६ परन्तु महायाजक के एक नौकर ने जो उस व्यक्ति
का रिश्तेदार था जिसका कान पतरस ने काटा था—पूछा, "क्या मैंने

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
तुझे यीशु के साथ जैतून की बारी में नहीं देखा था ? २७ पतरस ने
फिर इन्कार किया। और उसी क्षण मुर्गे ने बांग दी।

२८ कैफा के सामने यीशु का मुकदमा भोर को समाप्त हुआ, फिर उन्हें रोमी हाकिम के राजभवन[1] में ले जाया गया। उन पर दोष लगाने वाले स्वयं अन्दर नहीं गए। वे कहते थे कि ऐसा करने से "अशुद्ध"[2] हो जाएंगे और फसह का मेम्ना नहीं खा सकेंगे। २९ इसलिए हाकिम पीला-तुस ने उनके पास बाहर आकर पूछा "तुम इस व्यक्ति पर क्या दोष लगाते हो ? और उस पर किस बात की नालिश करते हो ?" ३० उन्होंने उत्तर दिया, "यदि यह अपराधी न होता तो हम इसे तेरे पास नहीं लाते !" ३१ पीलातुस ने उनसे कहा, "तो उसे ले जाओ और अपनी ही व्यवस्था के अनुसार उसका न्याय करो।" उन्होंने कहा, "परन्तु हम उसे क्रूस पर चढ़ाना चाहते हैं, और तेरी सहमति अनिवार्य है।"[3] ३२ इससे यीशु की वह भविष्यवाणी पूरी हुई कि किस ढंग से उनकी मृत्यु होगी।[4]

३३ जब पीलातुस वापिस राजभवन में गया तो उसने आज्ञा देकर यीशु को भी वहां बुलाया। पीलातुस ने यीशु से पूछा, "क्या तू यहूदियों का राजा है ?" ३४ यीशु ने पूछा, "राजा" जैसे तू कहता है या जैसे यहूदी कहते हैं ?"[5] ३५ पीलातुस ने त्यौरी चढ़ा कर कहा, "क्या मैं यहूदी हूं ? तेरे ही लोग और उनके महायाजक तुझे यहां लाए। क्यों ? तूने क्या किया है ?" ३६ तब यीशु ने उत्तर दिया, "मैं सांसारिक राजा नहीं हूं। होता, तो जब यहूदी अगुवों ने मुझे पकड़ा तब मेरे अनुयायी

---

१ मूलतः, "किले" २ यहूदी व्यवस्था के अनुसार अन्य जाति के घर में प्रवेश करना गम्भीर अपराध था। ३ मूलतः, "हमें अधिकार नहीं कि किसी का प्राण लें।" ४ यह भविष्यवाणी मत्ती २०:१९ में है—जिसका संकेत उसकी क्रूस की मृत्यु से है जो रोमियों की कानूनी प्रथा थी। ५ इस पद की व्याख्या—जो इस पुस्तक की व्याख्या से परे होगी—यह है, "क्या तेरा अर्थ यह है कि मैं उनका राजा और मसीह हूं?" रोमी हाकिम पीलातुस पूछ रहा था तो उसका अर्थ यही रहा होगा कि क्या तू विरोधी सरकार की स्थापना कर रहा है। परन्तु यहूदी लोग "राजा" शब्द का प्रयोग अपने धार्मिक राजा मसीह के लिए कर रहे थे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मेरी रक्षा के लिए लड़े होते। परन्तु मेरा राज्य इस जगत का नहीं।"
३७ पीलातुस ने उत्तर दिया "परन्तु तुम राजा तो फिर भी हो?" यीशु
ने कहा "हां, मैंने इसीलिए जन्म लिया। और मैं संसार में आया कि
सत्य को दर्शाऊं। जितने सत्य से प्रेम रखते हैं वे सब मेरे अनुयायी हैं।"
३८ पीलातुस ने पूछा, "सत्य है क्या?"
तब पीलातुस फिर लोगों के पास बाहर आया और उनसे बोला,
"वह किसी अपराध का दोषी नहीं। ३९ परन्तु तुम्हारी प्रथा के अनुसार
मैं प्रति वर्ष फसह के समय तुम्हारे लिए एक व्यक्ति को क़ैद से छोड़ता
हूं। इसलिए यदि तुम चाहते हो तो मैं 'यहूदियों के राजा' को छोड़ दूंगा।"
४० परन्तु उन्होंने फिर चिल्ला कर कहा "नहीं! इस व्यक्ति को नहीं,
परन्तु बरअब्बा को!" बरअब्बा एक डाकू था।

१९ तब पीलातुस ने यीशु की पीठ पर कोड़े लगवाए। २ और सिपा-
हियों ने कांटों का एक मुकुट गूंथकर उनके सिर पर रखा और उन्हें
बैंजनी वस्त्र पहनाया। ३ तब उन्होंने उपहास करने के लिए झुक कर
यीशु को प्रणाम[1] किया और उनके मुंह पर थप्पड़ मारे। ४ पीलातुस फिर
बाहर जाकर लोगों से बोला, "मैं उसे बाहर तुम्हारे पास ला रहा हूं,
परन्तु यह स्पष्ट है कि **मैंने उसे बिल्कुल निर्दोष पाया है।**" ५ तब यीशु
कांटों का मुकुट और बैंजनी वस्त्र पहने बाहर निकले। और पीलातुस ने
कहा, "देखो यह व्यक्ति!" ६ उन्हें देख कर महायाजक और यहूदी
अधिकारी चिल्लाने लगे, "क्रूस पर चढ़ाओ! क्रूस पर चढ़ाओ!"
पीलातुस ने कहा, "तुम्हीं उसे क्रूस पर चढ़ाओ। **मैंने उसमें कोई दोष
नहीं पाया।**" ७ उन्होंने कहा, "हमारी व्यवस्था के अनुसार उसे मृत्यु
दंड मिलना चाहिए क्योंकि उसने अपने आपको परमेश्वर का पुत्र कहा।"
८ पीलातुस ने जब यह सुना तो पहले से अधिक डर गया। ९ उसने
फिर यीशु को वापिस राजभवन में ले जाकर पूछा, "तू कहां का है?"

---

१ तात्पर्य यही है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

परन्तु यीशु ने कोई उत्तर दिया नहीं। १० पीलातुस ने कहा, "तुम मुझ
से नहीं बोलोगे ? क्या तुम्हें नहीं मालूम कि तुमको छोड़ देने का या क्रूस
पर चढ़ाने का मुझे अधिकार है ?" ११ तब यीशु ने कहा, "तुम्हारा
मुझ पर कोई अधिकार नहीं होता यदि तुम्हें ऊपर से नहीं दिया जाता।
इसलिए जिन्होंने[2] मुझे तेरे हाथ सौंपा उनका अपराध अधिक है।"

१२ तब पीलातुस ने उन्हें छोड़ने की कोशिश की परन्तु यहूदी
अगुवों ने उससे कहा, "यदि तू इस व्यक्ति को छोड़ेगा तो कैसर का मित्र
नहीं रहेगा। जो कोई स्वयं को राजा कहे वह कैसर का विरोधी है।" १३
यह सुनकर पीलातुस फिर यीशु को बाहर लाया और पत्थर के चबूतरे[3]
पर, न्याय आसन पर बैठ गया। १४ यह फसह से एक दिन पहले करीब
दोपहर का समय था। और पीलातुस ने यहूदियों से कहा, "यह रहा
तुम्हारा राजा।" १५ उन्होंने ऊंचे स्वर से पुकार कर कहा, "ले जाओ !
ले जाओ ! उसे क्रूस पर चढ़ाओ !" पीलातुस ने पूछा, "क्या ? मैं
तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ाऊं ?" महायाजकों ने चिल्लाकर उत्तर
दिया, "कैसर को छोड़ हमारा और कोई राजा नहीं।" १६ तब पीला-
तुस ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के लिए उन्हें सौंप दिया।

१७ आखिर यीशु उनके हाथों में सौंप दिए गए, और वह शहर के
बाहर अपना क्रूस उठाते हुए उस स्थान तक ले जाए गए जो "खोपड़ी"
(इब्रानी में "गुलगुता") कहलाता है। १८ वहां उन्होंने उन्हें और साथ
में दो अन्य व्यक्तियों को क्रूस पर चढ़ाया, एक को एक ओर और दूसरे को
दूसरी ओर और बीच में यीशु को। १९ पीलातुस ने एक दोष पत्र यीशु
के क्रूस पर लगवाया जिस पर लिखा था, "**नासरत का यीशु, यहूदियों
का राजा**।" २० जिस स्थान पर यीशु क्रूस पर चढ़ाए गए वह शहर के
पास था, और पत्र इब्रानी, लतीनी और यूनानी भाषाओं में लिखा था,
इसलिए बहुत से लोगों ने इसे पढ़ा। २१ तब महायाजकों ने पीलातुस
से कहा, 'यहूदियों का राजा' बदलकर लिख दे, 'उसने कहा,

---

२ मूलतः, "जिसने" ३ मूलतः, "उस जगह एक चबूतरा था जो इब्रानी
में गब्बत कहलाता है।"

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मैं यहूदियों का राजा हूं।" २२ पीलातुस ने उत्तर दिया, "अब जो लिख चुका, सो लिख चुका।"

२३, २४ जब सिपाहियों ने यीशु को क्रूस पर चढ़ा दिया, तो उनके कपड़ों के चार भाग किए, हर सिपाही के लिए एक भाग। परन्तु उन्होंने कहा, "हम उसके चोगे को न फाड़ें (क्योंकि उसमें सिलाई नहीं थी)। हम इस पर चिट्ठी डालें और देखें किसे मिलता है।" इससे धर्मशास्त्र का यह वचन पूरा हुआ, "वे मेरे वस्त्र आपस में बांटते हैं, और मेरे पहिरावे पर चिट्ठी डालते हैं" (भजन २२:१८)।

२५ और ऐसा ही सिपाहियों ने किया। क्रूस के पास यीशु की माता, मरियम, उनकी मौसी क्लोपास की पत्नी और मरियम मगद्लीनी खड़ी थीं। २६ अपने घनिष्ट मित्र[४] अर्थात् मेरे निकट जब यीशु ने अपनी माता को खड़े देखा तो उन्होंने उनसे कहा, "यह तेरा पुत्र है।" २७ और उन्होंने मुझसे कहा, "वह तेरी माता हैं! और उस समय से मैं[५] उन्हें अपने घर ले आया।

२८ यीशु ने समझ लिया कि अब सब कुछ हो चुका, और पवित्र शास्त्र का वचन पूरा करने के लिए कहा, "मैं प्यासा हूं।" २९ वहां सिरके से भरा पात्र रखा था, इसलिए एक स्पंज को उसमें डुबाया गया और उसे जूफे की डाली पर रखकर उनके होंठों तक पहुंचाया गया। ३० यीशु ने उसे चखकर[६] कहा, "पूरा हुआ" तब सिर झुकाकर प्राण छोड़ दिया।

३१ यहूदी अगुवे नहीं चाहते थे कि अगले दिन तक क्रूस पर चढ़ाए हुए लोग वहां टंगे रहें क्योंकि वह सब्त का दिन था (और विशेष महत्व का सब्त इसलिए था क्योंकि उस दिन फसह भी था), इसलिए उन्होंने पीलातुस से विनती की कि उन व्यक्तियों की टांगें तोड़ी जाएं ताकि वे जल्दी मरें, तब उनका शव उतारा जा सकता था। ३२ इसलिए सिपाहियों ने आकर उन दो पुरुषों की टांगें तोड़ीं जो यीशु के साथ क्रूस पर

---

४ मूलतः, "उस चेले को जिससे वह प्रेम रखता था।" ५ मूलतः, "उस चेले से" ६ मलतः, "वह सिरका लिया।"

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

टंगे थे। ३३ परन्तु जब वे उनके पास आए तो देखा कि वह पहले ही
मर चुके हैं, और उनकी टांगें न तोड़ीं। ३४ तौभी एक सिपाही ने भाले
से उनकी पसली छेदी और तुरन्त लोहू और पानी बहा। ३५ मैंने यह सब
स्वयं देखा और सही लिखा है ताकि तुम भी विश्वास करो।[७] ३६, ३७
सिपाहियों ने इसलिए ऐसा किया ताकि धर्मशास्त्र का यह वचन पूरा हो,
"उसकी कोई हड्डी तोड़ी न जाएगी," और "जिसे उन्होंने बेधा है, उस
पर दृष्टि करेंगे।"

३८ तब अरमतियाह के यूसुफ ने, जो यहूदी अगुवों के डर से यीशु
का गुप्त चेला था, साहसपूर्वक पीलातुस से आज्ञा मांगी कि यीशु का शव
ले जाए, और पीलातुस ने उसकी मान ली। इसलिए वह आकर यीशु
का शव ले गया। ३९ नीकुदेमुस जो यीशु के पास रात्रि में आया था[८]
वह भी क़रीब पचास सेर का मिला हुआ गन्धरस और एलवा लाया। ४०
उन्होंने मिलकर यहूदियों के दफ़न की प्रथा के अनुसार यीशु का शरीर
सूती कपड़े में लपेटा जो सुगंधित द्रव से तर था। ४१ यीशु जहां क्रूस पर
चढ़ाए गए थे, उस स्थान के निकट एक बगीचा[९] था जहां एक नई क़ब्र
थी जिसमें पहले कोई नहीं रखा गया था। ४२ अगला दिन सब्त का
था और क़ब्र नज़दीक थी, इसलिए जल्दी के कारण उन्होंने उन्हें वहीं
रखा।

२०

रविवार[१] को भोर के समय अंधेरा रहते ही मरियम मगदलीनी
क़ब्र पर आई और उसने देखा कि क़ब्र के मुंह पर का पत्थर लुढ़का
हुआ है। २ वह दौड़कर शमौन पतरस और मेरे[२] पास आई और उसने
कहा, "उन्होंने प्रभु के शव को क़ब्र से निकाल लिया है, और मुझे नहीं

---

७ मूलतः "जिसने यह देखा, उसी ने गवाही दी है, और उसकी गवाही सच्ची है और वह जानता है कि सच कहता है कि तुम भी विश्वास करो।"
८ अध्याय ३ देखिए। ९ मूलतः, "बारी" १ मूलतः, "सप्ताह के पहले दिन"
२ मूलतः "उस दूसरे चेले के पास जिससे यीशु प्रेम रखते थे।"

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
मालूम कि उसे कहां रखा है !" ३, ४ हम[३] क़ब्र को देखने दौड़ते हुए
गए, मैं[४] पतरस से आगे भागा और वहां पहले पहुंचा, ५ और झुक कर अन्दर
झांका और वहां कफ़न का सूती कपड़ा पड़ा देखा, परन्तु, मैं अन्दर नहीं
घुसा । ६ तब शमौन पतरस पहुंचा और अन्दर गया । उसने भी वहां
कपड़ा पड़ा देखा, ७ साथ ही अंगोछा देखा जिससे यीशु का सिर बन्धा
था और जो लिपटा हुआ अलग एक जगह पड़ा हुआ था । ८ तब मैंने[५] भी
अन्दर घुसकर देखा, और विश्वास किया कि वह जी उठे हैं—९ क्योंकि
तब तक हम नहीं समझते थे कि पवित्रशास्त्र के वचन के अनुसार वह फिर
जी उठेंगे ! १० तब हम[६] घर लौट गए ।

११ और उस समय तक मरियम भी क़ब्र पर लौट गई थी और
बाहर खड़ी रो रही थी । और रोते हुए उसने क़ब्र के अन्दर झांका, १२
और उसने श्वेत वस्त्र पहने हुए दो स्वर्गदूतों को सिरहाने और पैताने बैठे
हुए देखा, जहां यीशु का शव रखा गया था । १३ स्वर्गदूतों ने उससे पूछा,
"तू क्यों रो रही है ?" उसने उत्तर दिया, "क्योंकि वे मेरे प्रभु को उठा
ले गए हैं और मुझे नहीं मालूम कि उन्होंने उन्हें कहां रखा है ।" १४
उसने मुड़ कर देखा कि कोई उसके निकट खड़ा है । वह यीशु थे, परन्तु
उसने उन्हें नहीं पहिचाना ! १५ उन्होंने उससे पूछा, "तू क्यों रो रही
है ? किसको ढूंढ़ रही है ?' उसने समझा कि वह माली है और कहा,
"महाशय, यदि आपने उन्हें ले जाकर कहीं रखा है तो मुझे बता दीजिए
और मैं उन्हें ले आऊंगी ।" १६ यीशु ने कहा, "मरियम !" और
उसने उनकी ओर फिर कर उत्तर दिया, "हे गुरु !" १७ यीशु ने उसे
सचेत करके कहा, "मुझे मत छू, क्योंकि मैं अभी तक अपने पिता के पास
ऊपर नहीं गया । परन्तु जाकर मेरे भाइयों को बता दे कि मैं अपने और
तुम्हारे पिता, अपने और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जा रहा हूं ।"
१८ मरियम मगदलीनी ने जाकर चेलों को बताया "मैंने प्रभु को देखा
है !" तब उसने प्रभु का संदेश उन्हें दे दिया ।

१९ उसी दिन संध्या समय यहूदियों के डर के मारे चेले एक कमरे

---

३ मूलत:, "पतरस और वह दूसरा चेला ।" ४ "दूसरा चेला पहले पहुंचा ।"
५ तात्पर्य यही है । ६ मूलत:, "चेले"

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
[illegible] थे, तब [illegible] यीशु उनके बीच में आ खड़े
हुए ! और उन्होंने कहा, "तुम्हें शान्ति मिले" २० यह कहकर उन्होंने
उन्हें अपना हाथ-और पंजर दिखाया । अपने प्रभु को देखकर वे अति
आनन्दित हुए । २१ उन्होंने फिर उनसे कहा, "जैसे पिता ने मुझे भेजा
है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूं ।" २२ तब उन्होंने उन पर फूंका और
कहा, "पवित्र आत्मा लो ! २३ यदि तुम किसी के पाप क्षमा करो,
तो उसे क्षमा मिल जाएगी । यदि तुम उसको क्षमा न करो, तो उसे क्षमा
नहीं मिलेगी ।"

२४ चेलों में से एक व्यक्ति थोमा ("जुड़वां"), उस समय वहां
दूसरे के साथ नहीं था । २५ इसलिए वे उसे बताते रहे, "हमने प्रभु
को देखा है !" परन्तु उसने कहा, "मैं विश्वास नहीं करूंगा जब तक
उनके हाथों में कीलों के छेद न देख लूं– और उनमें अपनी उंगली न
डाल लूं—और उनके पंजर में अपना हाथ न डाल लूं !"

२६ आठ दिन पश्चात् चेले फिर इकट्ठे थे, और इस समय थोमा
उनके साथ था । द्वार बन्द थे, परन्तु एकाएक पहले की भांति यीशु उनके
बीच में आ खड़े हुए और बोले, "तुम्हें शान्ति मिले !" २७ तब उन्होंने
थोमा से कहा, "मेरे हाथों में अपनी उंगलियां डाल ! मेरे पंजर में
अपना हाथ डाल ! अब अविश्वासी मत बना रह ! विश्वास कर !"
२८ थोमा ने कहा, "हे मेरे प्रभु ! हे मेरे परमेश्वर !" २९ तब यीशु
ने उसे बताया, "तूने विश्वास किया क्योंकि तूने मुझे देखा है । परन्तु
धन्य हैं वे जिन्होंने मुझे बिना देखे विश्वास किया !"

३०, ३१ यीशु के चेलों ने उन्हें और भी अधिक आश्चर्यकर्म करते
देखा जो इस पुस्तक में नहीं लिखे गए, परन्तु इनका वर्णन इसलिए है कि
तुम विश्वास करो कि वही परमेश्वर के पुत्र मसीह हैं और उनमें विश्वास
करके जीवन पाओ ।

२१ इसके बाद यीशु गलील की झील के किनारे फिर से चेलों को दिखाई
दिए । और ऐसा हुआ : २ कि हमारे झुंड के लोग वहां उपस्थित

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

थे—शमौन पतरस, थोमा ("जुड़वां"), नतनएल (गलील के काना का
निवासी), मेरा भाई याकूब और मैं[1] और दो अन्यं चेले । ३ शमौन
पतरस ने कहा, "मैं मछली पकड़ने जा रहा हूं ।" हम सब ने कहा, "हम
भी चलते हैं ।" हम गए परन्तु रात भर हमने कुछ न पकड़ा ।

४ भोर होते ही हमने एक व्यक्ति को किनारे पर खड़े देखा । परन्तु
नहीं पहिचाना कि वह कौन है । ५ उसने पूछा, "अरे लड़को, कुछ
मछलियां हैं ?"[2] हमने उत्तर दिया, "नहीं ।" ६ तब उसने कहा,
"नाव के दाहिनी ओर अपना जाल डालो, तो बहुत मिलेंगी !" ऐसा ही
हमने किया ! मछलियों की भरमार हो गई ! उनके भार से जाल
खींचते नहीं बना । ७ तब मैंने[3] पतरस से कहा, "यह प्रभु हैं !" ऐसा
सुनते ही शमौन पतरस ने अपना अंगरखा पहिन लिया (क्योंकि वह कमर
तक नंगा था) और पानी में कूद पड़ा (और झील के पार गया) ।
८ बाकी हम सब नाव में ही रहे और भारी जाल को करीब ३०० फुट
तक खींचते हुए किनारे पर लाए ।

९ वहां पहुंच कर हमने देखा कि आग सुलगी हुई है और उसमें
मछलियां भूनी जा रही हैं, और वहां रोटी भी है । १० यीशु ने कहा,
"अभी पकड़ी हुई मछलियों में से भी कुछ लाओ ।" ११ इसलिए शमौन
पतरस ने डोंगी पर चढ़कर जाल को किनारे खींचा । उसने एक सौ तिर-
पन बड़ी मछलियां गिनीं, तौभी जाल नहीं फटा था ! १२ यीशु ने कहा!
"अब आओ और नाश्ता करो !" हममें से किसी को उनसे यह पूछने का
साहस नहीं हुआ कि क्या वही प्रभु हैं क्योंकि हमें इसका निश्चय हो चुका
था । १३ तब यीशु ने सबको रोटी और मछलियां परोसीं । १४ मरे
हुओं में से जी उठने के बाद यह तीसरी बार यीशु दिखाई दिए ।

१५ नाश्ते के बाद यीशु ने शमौन पतरस से कहा, "हे शमौन,
यूहन्ना के पुत्र, क्या तू इन सबसे बढ़कर मुझ से प्रीति रखता है ?"[4] पतरस
ने उत्तर दिया, "हां, आप तो जानते हैं कि मैं आपसे कितनी प्रीति रखता
हूं !" यीशु ने उससे कहा, "तो मेरी भेड़ों को चरा । १६ यीशु ने फिर

---

१ मूलतः, जबदी के पुत्र २ मूलतः, हे बालको ३ मूलतः, उस चेले ने जिससे
यीशु प्रेम रखता था । ४ मूलतः, इनसे बढ़कर मरकुस १४:२९ पढ़िए

Digitization by American Academy of Indic Studies: AAIS(USA)

प्रश्न दोहराया, "हे शमौन यूहन्ना के पुत्र, क्या तू वास्तव में मुझको प्यार
करता है ? पतरस ने कहा, "हां, प्रभु, आप तो जानते हैं कि मैं आपको
कितना अधिक प्यार करता हूं !" यीशु ने कहा, "तो मेरी भड़ों की देख-रेख
कर ।" १७ एक बार फिर उन्होंने उससे पूछा, "हे शमौन, यूहन्ना
के पुत्र, क्या तू सचमुच मुझ से अत्यधिक प्रेम करता है ?" पतरस उदास
हुआ कि यीशु ने इस प्रकार फिर तीसरी बार पूछा । उसने कहा, "हे प्रभु
आप मेरा दिल[5] जानते हैं, आप जानते हैं, मैं आपसे प्रेम रखता हूं ।" यीशु
ने कहा, "तो मेरे मेम्नों को चरा । १८ जब तू जवान था, तो जो चाहे
कर सकता था, जहां चाहे जा सकता था, परन्तु बुढ़ापे में तू अपना हाथ
बढ़ाएगा और दूसरे तुझे, जहां तू जाना भी न चाहेगा, ले जाएंगे ।" १९
यीशु ने उस पर यह प्रगट करने के लिए कहा कि परमेश्वर की महिमा के
लिए उसकी मत्यु किस प्रकार की होगी । तब यीशु ने उससे कहा, "मेरे
पीछे हो ले ।"

२० पतरस ने मुड़ कर उस चेले को भी आते देखा जिससे यीशु
प्रेम रखता था (वही जिसने भोजन के समय यीशु की ओर झुक कर उनसे
पूछा था, "हे प्रभु हममें से कौन आपको पकड़वाएगा ?") । २१ पतरस
ने यीशु से पूछा, "हे प्रभु, उसका क्या होगा ? वह कैसी मत्यु से मरेगा ?"[6]
२२ यीशु ने उत्तर दिया, "यदि मैं चाहूं कि वह मेरे लौटने तक जीवित[7]
रहे, तो तुझे क्या मतलब ? तू मेरे पीछे हो ले ।" २३ इसलिए भाइयों में
यह चर्चा फैल गई कि वह चेला नहीं मरेगा ! परन्तु यीशु ने यह नहीं
कहा ! उन्होंने केवल यही कहा, "यदि मैं चाहूं कि वह मेरे आने तक
जीवित रहे, तो तुझे क्या मतलब ?"

२४ वह चेला मैं ही हूं ! मैंने आंखों देखा हाल यहां लिखा है और
हम सब जानते हैं कि इन घटनाओं का वर्णन सच है ।

२५ और मैं सोचता हूं कि यदि यीशु के जीवन की सभी घटनाओं
को लिखा जाता, तो वे पुस्तकें सारे संसार में भी नहीं समातीं ।

---

५ मूलतः (सब कुछ) ६ तात्पर्य यही है. मूलतः, इसका क्या हाल होगा ?
७ मूलतः, ठहरा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

स्कैन्ड/ Scanned

MSS